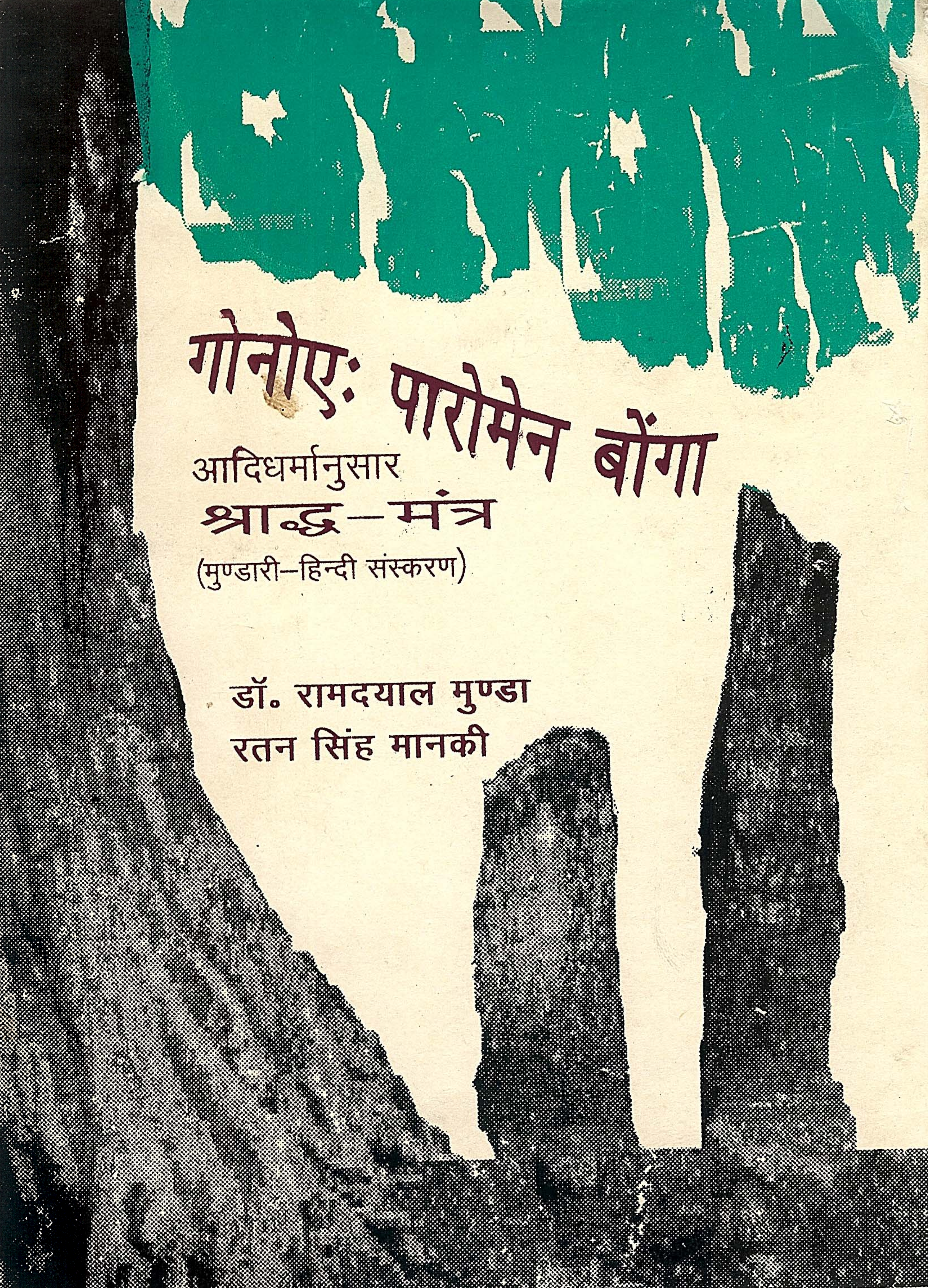


गोनोएः पारोमेन बोंगा

आदिधर्मानुसार
श्राद्ध–मंत्र

(मुण्डारी–हिन्दी संस्करण)

डॉ॰ रामदयाल मुण्डा
रतन सिंह मानकी

गोनोएः पारोमेन बोंगा

आदिधर्मानुसार

श्राद्ध–मंत्र

(मुण्डारी–हिन्दी संस्करण)

डॉ॰ रामदयाल मुण्डा
रतन सिंह मानकी

साइल राकाब पुथि सेंटर
बिराटी, कोलकाता – 700 049

प्रथम संस्करण : सरहुल, 2003

प्रकाशक : साइल राकाब पुथि सेंटर
बिराटी, कोलकाता – 700 049
फोन : 91–33–225391067

मुद्रक : सुकृत प्रेस
कचहरी रोड, राँची - 834 001
फोन - 2309242

ISBN : 81–87908–03–3
Subject : Religion
Language : Mundari-Hindi

आवरण : विश्वनाथ

सहयोग राशि : पच्चीस रुपये

GONOE? PAROMEN BONGA by Dr. Ram Dayal Munda & Ratan Singh Manki

पिचा साकाम (अनुक्रमणिका)

प्राक्कथन

मृत्यु एक कठोरतम अपरिहार्य सत्य है जिसका सामना आदिवासी ने उसका सामाजीकरण करके किया है जिसके अनुसार चलकर मनुष्य अमरत्व को प्राप्त करता है। मृत्यु के इस सामाजीकरण के केन्द्र में है छायावापसी (मुण्डारी : उम्बुल आदेर) की अवधारणा और तत्संबंधी अनुष्ठान जिसके अनुसार मृतक को उसके छाया रूप में उसके पुराने घर के अन्दर पहले से ही विराजमान पूर्वजों--पुर्खों के साथ रहने के लिए वापस बुलाया जाता है। सारना/आदिधर्मानुसार मुक्ति का यही मार्ग है : व्यक्ति का समाज में वापस आना – जीवन में और मरण में भी।

इस अनुष्ठान का मुण्डा सामुदायिक स्वरूप और उस समय प्रयुक्त होने वाले मंत्रों का मुण्डारी--हिन्दी संस्करण प्रस्तुत करते हुए हमें बड़ी प्रसन्नता हो रही है। गुणी सहृदय पाठकों एवं सहकर्मियों से हम सकारात्मक प्रतिक्रिया की आशा करते हैं ताकि इस प्रस्तुति को अधिकाधिक ग्राह्य बनाया जा सके और झारखण्डी सांस्कृतिक पुनर्रचना के अभियान को सफलीभूत किया जा सके। पुस्तक की पाण्डुलिपि तैयार करने से लेकर प्रकाशन--लोकार्पण करने तक की प्रक्रिया में सहयोग के लिए हम सर्वश्री संध्या मुण्डू, अशोक पागल और विश्वनाथ जी के प्रति आभारी हैं।

-- लेखकद्वय

मृत्यु संस्कार :

प्राण (सांस) विहीनता ही जीवंतता का अंत होती है, किन्तु मनुष्य की आत्मा अमर होती है। आत्मा के कालातीत अस्तित्व में मृत्यु ऐसा समय–बिन्दु होता है जिसके बाद व्यक्ति का भौतिक स्थूल रूप समाप्त हो जाता है। किन्तु वह सूक्ष्मातिसूक्ष्म अदृश्य रूप में विद्यमान रहता है। हम उसे नहीं देख सकते, किन्तु वह हमें देख सकता है। आदिवासी के सच्चाई और ईमानदारीपूर्ण व्यवहार के पीछे यही विश्वास काम करता है कि हमारे पूर्वज हमें देख रहे हैं इसलिए हमें ऐसा कुछ भी नहीं करना चाहिए जिससे उन्हें असंतोष हो।

किसी घर में मृत्यु होने का पता उसके आसपास के लोगों को उस घर से आनेवाली सामूहिक रूलाई से लग जाता है। घर–परिवार के बड़े–बुजुर्गों की एक बैठक होती है और गांव–बिरादरी और कुटुंबों के यहाँ खबर पहुँचाने के लिए संदेश वाहक भेजे जाते हैं। समाचार के दुखद होने का संकेत लोगों को तब मिल जाता है जब खबर पहुँचाने वाले आवभगत की जोहार और पैर धोने की औपचारिकताएँ अस्वीकार करते हैं। कुछ ही घंटों के अन्दर बिरादरी और नजदीकी संबंधी शोकाकुल घर को प्रहुँचने लगते हैं। वे साथ में दो गज सफेद कपड़ा लेकर आते हैं जिसे कफन के रूप में मृतक को दिया जाता है। लोग बारी–बारी से मृतक को कुछ बूंद पानी "पिलाते" हैं।

जब महत्वपूर्ण संबंधी, विशेषकर मृतक के मामाघर के लोग, आ जाते हैं तो मृतक को मृत्यु–संस्कार के लिए तैयार किया जाता है। ये तैयारियाँ विवाह संकार की तैयारियों जैसी होती है। मृतक के शरीर में तेल लगाया जाता है और उसे नया कपड़ा पहनाया जाता है। फूल भी दिए जाते हैं। जिस समय लोग मृतक को अपना अंतिम सम्मान अर्पित कर रहे होते हैं, उधर कब्रगाह में मृतक का अस्थाई "घर" (करीब 7 फुट लंबा, 3 फीट चौड़ा और 5 फीट गहरा, उत्तर–दक्षिण) बनाया जाता है। "घर" तैयार हो जाने की सूचना पाते ही मृतक को घर के बाहर आंगन में लाया जाता है। घर से निकलने के पहले मृतक से अनाज के कुछ दाने स्पर्श कराए जाते हैं। प्रतीकार्थ में मृतक घर की लक्ष्मी को अपने पीछे छोड़ जा रहा है। अंगारों पर सरसों के बीज डाले जाते हैं ताकि मृतक की यात्रा के रास्ते से दुष्टात्माएँ दूर हट जाएँ। नजदीक के संबंधियों में से चार लोग अर्थी को कंधा देते हैं।

शोकयात्रा शोकवाद्यसंगीत के साथ निकलती है। अर्थी घर और कब्रगाह के बीच तीन बार जमीन पर रखी जाती है। कब्रस्थान पर पहुँचने के बाद मृतक के "घर" की परिक्रमा (बाएँ से दाएँ) तीन बार की जाती है और अंतिम बार की परिक्रमा के बाद अर्थी को उत्तरी छोर पर उत्तर–दक्षिण (सिर दक्षिण को) रखा जाता है। इसके बाद मृतक को अर्थी से उतार कर उसके "घर" में ले जाया जाता है। मृतक के साथ उसकी कुछ प्रिय वस्तुएं भी रख दी जाती हैं। तदनंतर मृतक का एक करीबी संबंधी (संभवतः संतान) उसे आग, पानी और मिट्टी देता है। उसके साथ ही शेष लोग भी मृतक को मिट्टी देते हैं। इस तरह से "घर" भर जाता है। मिट्टी की ढेर के ऊपर सिर की तरफ एक फूल की शाखा रोप दी जाती है और उसके बगल में एक पत्थर डाल दिया जाता है। उस पर धुवन और दीया प्रज्वलित किए जाते हैं। इसके बाद सारे लोग नजदीक के जल–स्रोत को जाते हैं और अपने हाथ–पैर धोते हैं। गाँव का नापित सबके नाखून "काटता" है। इसी बीच बड़े बूढ़ों की एक बैठक होती है और कमान संस्कार की तिथि घोषित होती है।

मृत्यु प्रतीक रूप में "दूसरा विवाह" होती है जिससे मिट्टी का मिट्टी से, आग का आग से, पानी का पानी से और हवा का हवा से मिलन का अनुष्ठान होता है। इसके बाद मृतक की "छाया" की "घरवापसी" का अनुष्ठान होता है क्योंकि मरने के बाद आदिवासी स्वर्ग या नरक नहीं जाता, वरन् अपने पूर्वजों के साथ रहने के लिए अपने ही घर वापस आता है। उसी स्मृति को बनाये रखने के लिए लोग बच्चों का नामकरण उनके नाम से करते हैं। इसलिए अगर इसे पुनर्जन्म भी कहा जाए

तो यह पुनर्जन्म मनुष्य के रूप में ही होता है, किन्हीं कीड़े–मकोड़ों इत्यादि की अनंत योनियों में नहीं। किसी की मृत्यु से मृतक के घर एवं सारे कुटुंब में अशुचि होती है और उससे उबरने के लिए कई अनुष्ठान होते हैं, जिनकी परिणति मृत्यु के बाद किसी दिन, ज़िसका निर्धारण देश–काल के हिसाब से अलग–अलग अवधि में होता है, कमान/श्राद्ध के रूप में होती है। कमान एवं छाया की वापसी का अनुष्ठान संक्षेप में इस प्रकार संपन्न होता है :

निश्चित तिथि (साधारणतः मृत्यु के दसवें दिन) को गॉव बिरादरी के लोग अपने नाखून कटवाते हैं और मृतक के नजदीकी संबंधी सिर के बाल मुड़वाते हैं। शाम तक दूर के संबंधी भी पहुँचते हैं। शाम को बाल मुड़ाए हुए लोग गाँव की नदी/तालाब से नहा कर वापस आते हैं और उनका स्वागत उनके पैर धोकर किया जाता है। कुटुंब/मेहमान उन्हें कपड़े ओढ़ाते है। तदनंतर लोग आंगन में बैठ जाते हैं। उसके बाद छाया वापसी की तैयारी होती है। घर के अन्दर, पूर्वजों के कोने तक राख या चावल का चूर्ण बिखेर दिया जाता है। पूर्वजों के कोने में बाद में प्रज्वलित करने के लिए एक दीया छोड़ दिया जाता है। ''छाया वापसी'' के लिए जाने वाले अपने साथ हंसुआ–फार, पुआल, केन्दू की टहनियां, पानी और चावल की मदिरा ले जाते हैं। गाँव के बाहर चौराहे पर केन्दू की टहनियों से एक छोटा कूबा बनाते हैं। उसे पुआल से छाते हैं। यह मृतक का घर मान लिया जाता है। समझा जाता है कि मृतक चौराहे पर फंसा पड़ा है इस दुविधा में कि कहाँ जाएँ। पानी छिड़क कर उसे 'स्नान' कराया जाता है और ''खाने–पीने'' को दिया जाता है। इसके बाद उस कुंबे में आग लगा दी जाती है। जलती आग के बीच ही मृतक का निकट संबंधी मृतक को संबोधित करते हुए कहता है– अरे फलाना, तुम्हारा घर जल रहा है, चलो भागो। इसके बाद हंसुआ–फार वाले व्यक्ति के नेतृत्व में लोग चुपचाप वापस लौटते हैं। केवल हंसुआ पर फार की हल्की चोट की आवाज सुनाई पड़ती है। घर पहुँचने पर दरवाजा खटखटाते हैं। अन्दर से कोई पूछता हैं – कौन है ? इस पर ''आगन्तुक'' अपना "परिचय" बताते हैं जो कि उस समुदाय का संक्षिप्त ऐतिहासिक परिचय होता है। जब अन्दर के लोग आश्वस्त हो जाते हैं कि आगन्तुक दुखों को छोड़कर सुख लेकर आए हैं तो उनके अन्दर जाने के लिए

दरवाजा खोला जाता है। पूर्वजों के कोने का दीया सुलगाया जाता है और छितराई हुई राख की परीक्षा ली जाती है और घोषणा की जाती है कि मृतक "वापस" आ गया।

उसके आगे का कार्यक्रम मृतक की आत्मा को पूर्वजों के साथ सम्मिलित कराने का होता है। आंगन के बीच मृतक का निकटतम संबंधी पुरूष (सामान्यतया पुत्र या भतीजा) मुख्य श्राद्धकर्त्ता के रूप में पूरब की ओर मुंह करके बैठता है। गाँव का पाहन/बैगा/बुजुर्ग उसकी दाहिनी और उत्तर की ओर मुंह करके बैठता है। सामान्य पूजा सामग्रियों में होते हैं–लोटा में पानी और उसमें आम की पत्तियाँ, धुवन, सिंदूर, नया सूत, गुलांची के फूल, अक्षत, चावल की मदिरा और गुड़ और मधु से पका हुआ अरवा चावल का मिष्टान्न। पाहन/बैगा सफेद, लाल और काली मिट्टी से एक चौका बनाता है, जो सृष्टि, पृथ्वी और चारों दिशाओं का प्रतीक होता है। प्रस्तुत अनुष्ठान का मूल उद्देश्य होता है, मृतक की आत्मा को परमेश्वर एवं उसके सहयोगी देवताओं के साक्ष्य में तथा कुटुंब–बंधुओं की उपस्थिति में परिवार के पूर्वजों के साथ सम्मानपूर्वक शामिल करना।

गोनोएः पारोमेन बोंगा

बान्दा / गाड़ा / डाड़ीताः रे

दुकुरे उयुःआकान सोबेन होड़ोकोसागाते बांगाइःजान होड़ोआः नाड़ेः नातारेन होड़ो बोओः होयोकोः तायोमतेः रेआड़ानताना आर दाःजापाः रेगे बाइआकान बोओंगा टायादरेः दुबताना।

बोंओंगा सानापाना को–गोलांचि बा, दिआ सेंगेल, धुना–सिंदुरि, लोटादाः रे उलि साकाम आर गुड़लोः इसिनाकान लेटे माण्डिरेआः डुमाङ को।

सिंबोंगा आर ओते एंगा गोआरिकेकिन तायोमते हासा, दाः, सेंगेल, आर होयोते बाइलेन बांगाइःजान होड़ो होरोकेन बुरू बोंगा, इकिर बोंगा, सेंगेल बोंगा आर होयो बोंगाकोको रागोःआ आर आकोआः नुतुमते मिमिआद लेटे माण्डि डुमाङ दोड़ोमोः नांगेन तेआराकाना। पाआंड़ दाःतेः हिरचिनताना, सोबेनकोएः चिरचिजादकोआ। बोओंगा होड़ो बाएः ओमोः ताना। बोंगा एटेगोःताना।

1

हे सिरमारेन सिंबोंगा
ओतेरेन ओते एंगा
तोआलेका तुरोःकिन
दही लेका हासुरोःकिन।।

2

आबेनगे मुनुरेनकिन
आबेनगे टुण्डुरेनकिन
आबेनगे सुबारेनकिन
आबेनगे चुटिरेनकिन।।

श्राद्ध मंत्र

तालाब / नदी / डाड़ी के पास

दुख में गिरे हुए सभी लोगों की ओर से मृतक व्यक्ति के नजदीकी नाते का व्यक्ति सिर मुड़ाने के बाद नहाकर आता है और पानी के नजदीक बने पूजा स्थल पर बैठता है।

पूजा सामग्री–गुलांची के फूल, दीआ–आग, धुवन–सिंदूर, लोटापानी पर आम की पत्तियां और गुड़ के साथ पके भात के पिंडे।

परमेश्वर और धरती माता की गुहार करने के बाद मिट्टी,पानी, आग और हवा से बने व्यक्ति की रक्षा करने वाले पहाड़ी देवता, जलदेवता, अग्नि देवता और वायु देवता को बुलाया जाएगा और उनके नाम से दाननिमित्त एक–एक पिंड बना है। पाहन अपने पर और सब पर पानी छिड़कता है। श्राद्धकर्त्ता को पुष्पांजलि के लिए फूल दिए जाते हैं। पूजा आरम्भ होती है।

1

हे आकाश के परमेश्वर
पृथ्वी की धरती मां
दूध–से उगने वाले
दही–से डूबने वाले।

2

तुम ही आदि के हो
तुम ही अंत के हो
तुम ही मूल के हो
तुम ही चोटी के हो।।

जोनोमाते हानसाःरेनकिन
गोनोएःआते पारोमरेनकिन
जूगु–जूगु जीदाकानकिन
जानाओ–जानाओ ताइआकानकिन।।

होयोरे जी ओओमकिन
दाःरे मायोम सीरजाओकिन
सिरमारे गुयु तूरुबकिन
ओतेरे हिता पारचाओकिन ।।

दाः बितार उकुआकान
जालाकार बितार दानाङाकान
ओतेबेन दांड़ाकेदा
धरतीबेन खोजार केदा।।

हाइ दुताम, काड़ाकोम दुताम
होरो दुताम, लेंडाद दुताम
कुल दुतामकेनाबेन
कुल दाराड़ाकेनाबेन।।

आले आबेनाः होनको नांगेन
आले आबेनाः गांड़ाको नांगेन
ओतेबेन बाइकेदा
धरतीबेन बाडुइकेदा।।

सिंगि तुरोः, चाण्डुः मुलुः
काटा जाम्बाड़ा, बोओःकुन्दुड़ि
आबेनाः कोयोङरे
आबेनाः सिपिं रे।।

जिलि–मिलि ओते
लिबि–लिबि सिरमा
पाटि लेका बिलाकाना
डुबा लेका हारुबाकाना।।

3 जन्म से उस ओर के हो
मृत्यु से उस पार के हो
युग–युग जीवंत
युग–युग स्थापित।।

4 हवा में प्राण देने वाले
पानी में लहू सिरजाने वाले
आसमान में झोपड़ी बनाने वाले
धरती में बीज बोने वाले।।

5 पानी के अन्दर छिपी हुई
समुद्र के भीतर दबी हुई
तुमने पृथ्वी को ढूंढ़ निकाला
तुमने धरती को खोज निकाला।।

6 मछली–दूत, केकड़ा–दूत
कछुआ–दूत, केंचुआ दूत
तुमने उन्हें दूत बनाकर भेजा
तुमने उन्हें अगुआ बनाकर भेजा।।

7 अपने बच्चों के लिए
अपनी संतान के लिए
तुमने पृथ्वी का निर्माण किया
तुमने धरती का गठन किया।।

8 सूर्योदय की दिशा, चन्द्रोदय की दिशा
उत्तर दिशा, दक्षिण दिशा
तुम्हारी गोदी में
तुम्हारी अंजलि में।।

9 झिलमिल करती धरती
लिबलिबाता आसमान
चटाई की तरह बिछी हुई
डूभा की तरह औंधा हुआ।।

10

ओते चेतान टुडातानिः
लाता बिताऱ उगुराकनिः
होयोरे आपिर ओटाङतानि।
दाः बितार ओयारतानिः।।

धरती के ऊपर रेंगनेवाले
खोह के भीतर छिपे हुए
हवा में उड़ने–फिरने वाले
पानी के भीतर तैरने वाले –

11

जोम–नू ओओमकिन
दाः तासाद हाआटिंकिन
ऊम्बुलकिन, चाआतोमकिन
होओरोकिन, जाआंगिकिन।।

सबको खाना–पीना देने वाले
सबको घास–पानी बांटने वाले
छाया देने वाले, छतरी देने वाले
रक्षा करने वाले, ओगरने वाले।।

12

बिर–बुरू, गाड़ा–पिड़ि
दारू–सिं, तासाद–रूड़ाः
आनाः–मानाः जो सिबिल
उलि–कांटाड़ा, तारोब–तिरिल।।

वन–पहाड़, नदी–मैदान
पेड़–पौधे, घास–फूस
अनेक प्रकार के स्वादिष्ट फल
आम–कटहल, चिरौंजी–केंदू ।।

13

सिंगि–चाण्डुः, इपिल–रिम्बिल
होयो गामा, सेंगेल–आरिल
आले नांगेनबेन बाइकेदा
आले नांगेनबेन बाडुइकेदा।।

सूरज–चांद, तारे–आसमान
हवा–पानी, आग–ओला
हमारे लिए तुमने बनाए
हमारे लिए तुमने सिरजे।।

14

तारा निदा, तारा सिंगि
सेताः–सिंगाड़ा, तिकिन–तारासि
कामि सोमाएबेन तोलकेदा
रूडुन सोमाएबेन ठाराओकेदा।।

आधा समय रात, आधा समय दिन
सुबह–सूर्योदय, दोपहर–अपराहन
काम के लिए समय बांधा
आराम के लिए समय ठहराया ।।

15

गुडुलु–सारजोम, माद–मादुकाम
बाड़े–सेकेरेः, कादाला–काराम
सोसो दारू सुबा सानामाङ
अखण्ड बिर–बुरु दानाङ।।

गोंदली–शाल, बांस–महुआ
बड़–सेकेरेः, केला–करम
भेलवा पेड़ के समक्ष
अखण्ड वन के भीतर ।।

16

लुटुकुम हाड़ाम, लुटुकुम बुड़िआ
सिदा उतार कुलगिआकिन
आलेआः सिदा पुरखाकिन
आलेआः जाओ हाड़ामकिन।।

लुटकुम बूढ़ा, लुटकुम बुढ़िया
सृष्टि की प्रथम दम्पति
हमारे प्रथम पुरखे
हमारे पहले पूर्वज।।

डुमाङ हासा, अंजिलि दाःते
होड़ोमो हुमु, बालबाल दाःते
बाइकेदकिनाबेन
बाडुइकेदकिनाबेन ।।

चुकाः–बाआंडा दाःते
उलि साकाम चोम्पाते
हिरचिकेदकिनाबेन
तिरपिकेदकिनाबेन ।।

एन हासा होड़ोमोरे
एन रोओड़ो मुटु रे
जीबेन ओमकेदा
सायादबेन ओङकेदा ।।

मानोआहोन, मानोआ गांड़ा
जू ताञ दुलाड़ाकिन
नेः ताबेन काड़ाबा डांडि
हेनेः ताबेन सेएल कुटि ।।

साब दाड़िनबेन ताबु
जापाः दाड़िनबेन ताबु
सीबेन, चालुइबेन
रुडुङेबेन, सेटेःएबेन ।।

नी ताबेन उरिः एंगा
हिनिः ताबेन मेरोम एंगा
नी नेरे बाबा एंगा
हिनिः एनरे कोदे एंगा ।।

जीदान होरो–गोओड़ोमको
तोआ–माण्डि ओओमको
लेलकोबेन, हिराकोबेन
जोगाओकोबेन, जोतोनकोबेन ।।

17
मिट्टी के ढेले से, अंजलि पानी से
शरीर के मैल से, पसीना पानी से
तुमने उन्हें बनाया
तुमने उन्हें गढ़ा ।।

18
कलश–भंडा के पानी से
आम की पत्तियों से
तुमने उन्हें जल छिड़का
तुमने उन्हें पानी झिमकाया ।।

19
उस माटी की काया में
उस सूखी लकड़ी में
तुमने जीवन दान दिया
तुमने उसमें सांस फूंकी ।।

20
मानव संतान, मानव संतति
जाओ मेरे प्यारे बच्चो
यह रही हल की मूठ
यह रहा ओखल स्थल।।

21
तुम इसे ठीक से पकड़ो
तुम इसे ठीक से जकड़ो
तुम इसे जोतो, कोड़ो
तुम इसे कूटो, छांटो ।।

22
यह रही गौ माता
यह रही बकरी मां
यह यहां धान मां
वह वहां मडुआ मां ।।

23
ये जीवन के रक्षक
ये दूध–भात दायक
तुम इन्हें देखो–भालो
तुम इन्हें जुगाओ, संभालो ।।

कुरुमुटु कामिबेन
बालबाल दाः जोरोएबेन
हेर चालुः, बिद चाटाः
नामेआबेन हाटाः–हाटाः ।।

दाःलेका बिड़िसिरोगा
गितिल लेका ताकिदोगा
टुंकि रे, सेएलरे
पोटोमरे, चाटाकारे ।।

मेद पेरेःबेन लेलेआ
लाइः पेरेःबेन जोमेआ–
मेनतेबेन काजिकेदा
मेनतेबेन बाकांड़ाकेदा ।।

जू मानोआ होनकिन
जू मानोआ गांड़ाकिन
मादुकाम बा लेका गे
कुंइडि जो लेकागे ।।

पाआःगे, पोओःगे
पोआओःबेन, पोसाओःबेन
लेपालाड़ि बाड़े लेका
गोटा दिसुम दालोबेबेन ।।

हेर पुना, रोआ पुनारे
एन पुना, जोम नावा रे
बा, बुरु, बाताउलि रे
आड़ान्दि रे, कोड़ान्दि रे ।।

सारजोम दारू सुबा रे
दिआ सेंगेल सामाङ रे
जोआरबेन, गोआरिबेन
आर्जीबेन बिनती बेन ।।

24 मन लगाकर काम करो
पसीना पानी बहाओ
बोओ, कोड़ो, रोपो, जोतो
भर–भर सूप पाओ ।।

25 पानी की तरह ठहरेगा
बालू की तरह जमेगा
टोकरी में, ओखली में
मोरिओं, छटकों में ।।

26 भर नजर देखोगे
पेट भर खाओगे –
इस तरह तुमने कहा
इस तरह तुमने बताया ।।

27 जाओ हे मानव संतान
जाओ हे मानव संतति
महुआ के फूल की तरह
डोरी के फल की तरह ।।

28 तुम फूलो, फलो
तुम बढ़ो, पलो
विस्तृत बटवृक्ष की तरह
सारे देश में छा जाओ ।।

29 प्रथम बोआई, प्रथम रोपाई में
प्रथम मिसाई, नवान्न खाने में
सरहुल, माघ, ग्राम–पूजा में
विवाह में – शादी में ।।

30 शाल वृक्ष के नीचे
दीप–अग्नि के समक्ष
तुम नमस्कार करो, गुहार को
अर्जी करो, विनती करो –

31

मेनतेबेन काजिकेदा
मेनतेबेन बाकांड़ाकेदा
आलेआः बुगिन नागेन
आलेआः नापाए नागेन ।।

इस तरह तुमने कहा
इस तरह तुमने बखाना
हमारी भलाई के लिए
हमारे कल्याण के लिए ।।

32

बुरु बोंगा, इकिर बोंगा
माड़ा बुरु, देसाउलि
नागे एरा, बिन्दि एरा
चांडी एरा, जाएर एरा ।।

पहाड़ी देवता, जल देवता
बड़ पहाड़ी, सीमांत देव
नाग देव, बिन्दी देवी
चंडी देवी, जाहेर देवी ।।

33

बाबा एंगा, कोदे एंगा
होओरोको, जांगिको
खिति किरसि जोओगाओको
उरिः–मेरोम जोओतोनको ।।

धान मां, मडुआ मां
इनके रक्षक इनके पालक
हमारी खेती–जुगानेवाले
गाय–बकरी संभालने वाले ।।

34

चुटु काटेआआते बांचाओको
कुम्बुडु–जुम्बुड़िआते कोओटोंको
रुआ–राबाङरे कोयोःको
दुकु–बिपतिरे हीराको ।।

चूहे–मूसों से बचाने वाले
चोर–लोभियों को रोकनेवाले
रोग बीमारी में देखने वाले
दुख–विपत्ति में पूछने वाले ।।

35

दिसुमरेन दिसुम बोंगाको
सिमानरेन सिमान बोंगाको
हातुरेन हातु बोंगाको
ओड़ाःरेन ओड़ाः बोंगाको ।।

देश–देश के देवतागण
सीमा के सीमान्त देवगण
गांव के ग्राम देवतागण
घर के गृह देवतागण ।।

36

ओड़ोःगे नुतुमते का तेबाःजानको
चुंडुलते का टोःजानको
सोबेनगेले गोआरिजादपेआ
सोबेनगेले बिनती जादपेआ ।।

अन्य जिनका हम नाम न ले पाए
जिनको हम इंगित न कर पाए
हम सबको गुहारते हैं
हम सबसे विनती करते हैं ।।

37

मिद गाण्डु, मिद चाल्पारे
मिद पाटि मिद पांति रे
जाओगे दुब जारू को
जाओगे जोआर–जागार को ।।

एक पीढ़े में, एक कुन्दे में
एक चटाई, एक पांति मे
हमेशा बैठने–बतियाने वाले
हमेशा मिलने–जुलने वाले ।।

38

तुड़ि मा सुतामते
बादि मा बायार ते
हाड़ागुकोःपे ताबू
नोसोरकोःपे ताबु ।

तुड़ी की रस्सी से
बांधी की डोर से
तुम उतर कर आओ
तुम नजदीक आओ ।।

39

जोआर ! जोआर ! जोआर !
सिंबोंगा, गोआरि हो गोआरि !
ओते एंगा, गोआरि हो गोआरि !
हाड़ाम होड़ोको गोआरि हो गोआरि ।।

जोहार ! जोहार ! जोहार !
परमेश्वर को जोहार हो !
धरती मां को जोहार हो !
पुरखे पूर्वजों को जोहार हो ।।

40

तिसिं दो फलना हुलाङ
तिसिं दो फलना चाण्डुः
फलना हातु बितार रे
फलना टोला सिमान रे ।।

आज फलाने दिन
आज फलाने महीने में
फलाने गांव के बीच
फलाने टोले की सीमा में ।।

41

मोड़े हागा हातुरेन
कुपुल गंगा दिसुमरेन
हिजुः सेटेराकानाले
होपोर जापाःआकानाले ।।

पांच भाई गांव के
कुटुम्ब–बन्धु देश के
हम आ पहुँचे हैं
हम नजदीक आए हैं ।।

42

आले तालारेन फलना ताले
आले बितारेन फलना ताले
आले तालाआतेः हिगाड़ानजान
आले बितारातेः बिनगान जान ।।

हमारे मध्य का फलाना
हमारे भीतर का फलाना
हमारे बीच से जो छिनग गया
हमारे अन्दर से जो अलग हुआ ।।

43

बांगाइःजान एन होड़ो ताले
आले बागेकेद परजा ताले
एन दुकाआते पारोमेन नांगेन
एन बालाएआते उबारेन नांगेन ।।

जो नहीं रहा वह आदमी
जो हमें छोड़ गयी वह प्रजा
उस दुख से पार होने के लिए
उस विपत्ति से उबरने के लिए ।।

44

आपेताःले गोआरिताना
आपेताःले बिनतीताना
गोआरिताले आयुमलेपे
बिनती ताले आतेन लेपे ।।

हम तुम्हें गुहारते हैं
हम तुमसे विनती करते हैं
हमारी प्रार्थना सुन लो
हमारी विनती मान लो ।।

45

उपल बा पुकुरिआते
ताड़ाए बा बान्दाआते
रेआड़ा आगुआकानाले
उम आगुआकानाले ।।

कमल फूल वाली पोखरी से
पंकज फूल वाले बांध से
हम नहाकर आए हैं
हम धुलकर आए हैं ।।

46

बोंगा बाइजान एन होड़ो
दानाङजान एन परजा
आपेआ: उम्बुलरेगे: ताइआकाना
आपेआ:चोतोररेगे: ताइआकाना ।।

जो देवता बना वह आदमी
जो छिप गयी वह प्रजा
तुम्हारी छाया में ही रहा है
तुम्हारी छतरी में ही रही है ।।

47

हासा–दा:ते बाइलेन
सेंगेल–होयोते टेकाओलेन
होड़ोमो एना मुसिं रेआ:
सोमाए एना बारसिंरेआ: ।।

मिट्टी–पानी से निर्मित
आग–हवा से टिका हुआ
वह एक दिन का शरीर
वह एक दिन का समय ।।

48

आपे ओमलेद एन होड़ोमो
आपे चेदलेद एन सोमाए
तिसिंले ओम रुआड़ापेताना
तिसिंले चेद रुआड़ापे ताना ।।

तुम्हारा दिया हुआ वह शरीर
तुमसे प्रदत्त वह समय
हम तुम्हें वापस करते हैं
हम तुम्हें वापस फिराते हैं ।।

49

रोआ रूप एन होड़ो ताबु
हिता रूप एन परजा ताबु
बुगिलेका होरोइपे
नापाएलेका जांगीपे ।।

आत्मा रूप उस आदमी को
बीज रूप उस प्रजा को
तुम उसे सकुशल रखो
तुम उसे स्वस्थ रखो ।।

50

ओतेआते नामलेन हासा होड़ोमो
सिंगिआते नामलेन मेद–मुआड़ा
सिरमाआते नामलेन होयो सायाद
जलाकाराते नामलेन दा: मायोम ।।

धरती से मिला मिट्टी रूप शरीर
सूरज से मिला अग्नि रूप चेहरा
आकाश से प्राप्त वायु सांस
समुद्र से मिला पानी लहू ।।

51

हासागे ती काटा
हासागे मोचा डाटा
हासागे जिलु जाङ
हासागे बोओ: हाताङ ।।

मिट्टी ही हाथ–पैर
मिट्टी ही मुंह–दांत
मिट्टी ही मांस–हड्डी
मिट्टी ही सिर–मस्तिष्क ।।

हासागे ऊब–सारसार
हासागे ऊर–ईम
हासागे सीर–पोटा
हासागे कुड़ाम–मायाङ ।।

हासागे पाचिरि बिउर
हासागे ताला मुतुल
हासागे सालान्दि–चांदाए
हासागे पिंडिगि–कुण्डाम ।।

हासा हिसाब सुगाड़ा सुमुङ
होड़ोमो सेन बाड़ाएआ
कामि उदाम दाड़िआ
लान्दा जागार दाड़िआ ।।

हासा हिसाब ओंड़ाजान रे
होड़ोमो दुब हापेआ
ती काटा मेद लुतुर
सोबेन को दुडुम हापेआ ।।

एनकागे दाः पेड़ेः माराङ
दाःते होड़ोमो टेकाओआकाना
दाः हिसाब सुगाड़ा सुमुङ
ने होड़ोमो सेसेनताना ।।

दाःगे मायोम–बालबाल
दाःगे सुनुम–इतिल
दाःगे होड़ोमो हुमु
दाःगे मोचा सिबिल ।।

दाःगे सिदा सिरजान
दाःगे आसुल–आपासुल
दाःगे माइन–मानातिङ
दाःगे गिउः सोरोम ।।

52
मिट्टी ही बाल–नख
मिट्टी ही चर्म–हृदय
मिट्टी ही नाड़ी–आंत
मिट्टी ही छाती–कमर ।।

53
मिट्टी ही दीवाल–घेरा
मिट्टी ही मध्य खूंटा
मिट्टी ही छांछा–किनार
मिट्टी ही पीढ़–पिछुआर ।।

54
मिट्टी का हिसाब ठीक रहने तक
यह शरीर चलता–फिरता है
काम उद्यम को समर्थ है.
हँसने–बोलने को समर्थ है ।।

55
मिट्टी का हिसाब बिगड़ जाने पर
शरीर चुपचाप बैठ जाता है
हाथ–पैर, आँख–कान
सब चुपचाप सो जाते हैं ।।

56
उसी तरह पानी भी बड़ी शक्ति है
पानी से शरीर टिका है
पानी का हिसाब ठीक रहने तक
यह शरीर चलता फिरता है ।।

57
पानी ही लहू–पसीना
पानी ही तेल–चर्बी
पानी ही शरीर का मैल
पानी ही मुंह का स्वाद ।।

58
पानी ही प्रथम सृजन
पानी ही पोषण–जीवन
पानी ही मान सम्मान
पानी ही लोक लाज ।।

दाः हिसाब ओंड़ाजान रे
ने होड़ोमो दुब हापेआ
ती काटा मेद लुतुर
सोबेनको दुडुम हापेआ ।।

59 पानी का हिसाब बिगड़ जाने पर
यह शरीर चुप बैठ जाता है
हाथ पैर आँख कान
सब चुपचाप सो जाते हैं ।।

एनकागे लोलो पेड़ेः माराङ
लोलोते होड़ोमो टेकाओआःकाना
लोलो हिसाब सुगाड़ा सुमुङ
ने होड़ोमो सेसेनताना ।।

60 उसी तरह ताप एक शक्ति बड़ी
ताप से शरीर टिका है
ताप का हिसाब ठीक रहने तक
यह शरीर चलता–फिरता है ।।

लोलोते मायोम लिंगिओःआ
लोलोते लाइः होण्डोएःताना
दिरि राटि जिराओःताना
माण्डिआते पेड़ेः बाइओःताना ।।

61 ताप से लहू बहता है
ताप से पेट खौलता है
पत्थर तक हजम होता है
भोजन से ऊर्जा बनती है ।।

लोलोते अंकुरि उपाना
लोलोते दाः बासाङा
लोलोते उतु रोंगोओःआ
लोलोते होटोः तेताङा ।।

62 ताप से अंकुर निकलता है
ताप से पानी गर्म होता है
ताप से दाल जलती है
ताप से कंठ सूखता है ।।

लोलोते साकाम सुड़ाओःआ
दारूरे बाओःआ, जोओःआ
लोलोते जोओको जारोमोःआ
जारोमाःको ओतेरे उयुगोःआ ।।

63 ताप से पत्तियाँ निकलती हैं
पेड़ों पर फूल फल लगते हैं
ताप से फल पकते हैं
पके फल जमीन पर गिरते हैं ।।

लोलोते साकाम उरुडूआ
लोलोते मुटुको तोरोएगोःआ
लोलोते हासा केटेगोःआ
लोलोते–मेड़ेद सेरोगा ।।

64 ताप से पत्तियाँ झरती हैं
ताप से कुंदा राख होता है
ताप से मिट्टी कड़ी होती है
ताप से लोहा गलता है ।।

लोलो हिसाब ओंड़ाजान रे
ने होड़ोमो दुब हापेआ
ती काटा, मेद–लुतुर
सोबेनको दुडुम हापेआ ।।

65 ताप का हिसाब बिगड़जाने पर
यह शरीर चुप बैठ जाता है
हाथ–पैर, आँख–नाक
सारे चुप सो जाते हैं ।।

66

एनकागे होयो पेड़ेः माराङ
होयोते होड़ोमो टेकाओआकाना
होयो हिसाब सुगाड़ा सुमुङ
ने होड़ोमो सेसेनताना ।।

उसी तरह हवा एक शक्ति बड़ी
हवा से शरीर टिका हुआ है
हवा का हिसाब ठीक रहने तक
यह शरीर चलता फिरता है ।।

67

कुड़ाम कुकुरु चापुआ
होयो कारे का सेसेन
दाः लोः होयो कारे
बानोः पेड़ेः सिरजान ।।

छाती खोखली धौंकनी
हवा के बिना चल सकती नहीं
पानी के साथ हवा बिना
सृजन की शक्ति नहीं ।।

68

माण्डि का नामोः रेओ
ने होड़ोमो सेसेना बारसिं
मेनदो होयो–सायाद बेगर
का सेसेना जेता इमिनाङ ।।

खाना नहीं मिलने पर भी
यह शरीर दो दिन चल सकता है
किंतु हवा–सांस लिए बिना
नहीं चल सकता कुछ पल भी ।।

69

होयो पेड़ेः ताइन सुमुङ
ने होड़ोमो सेन बाड़ाएआ
कामि–उदाम दाड़िआ
लान्दा जागार दाड़िआ ।।

हवा की शक्ति रहने तक
यह शरीर चलता–फिरता है
काम–उद्यम कर सकता है
हँस बोल सकता है ।।

70

होयो हिसाब ओंड़ाजान रे
ने होड़ोमो दुब हापेआ
ती काटा मेद–लुतुर
सोबेन को दुडुम हापेआ ।।

हवा का हिसाब बिगड़ जाने पर
यह शरीर चुप बैठ जाता है
हाथ–पैर आँख–कान
सारे चुप सो जाते हैं ।।

71

आपेआः होराते नामलेनाः
आपेआः पेड़ेःते तेलालेनाः
आपेआः काटासुबारेले जिमाजादा
आपेआ : तीरेले जामाजादा ।।

तुम्हारे माध्यम से जो मिला
तुम्हारी शक्ति से जो प्राप्त हुआ
तुम्हारे पैरों पर जिम्मा देते हैं
तुम्हारे हाथों में जमा करते हैं ।।

72

हासा होरोकेन बुरु बोंगा
दाः जांगिकेन इकिर बोंगा
सेंगेल गुपिकेन सेंगेल बोंगा
होयो जुटिकेन होयो बोंगा ।।

मिट्टी के रक्षक पहाड़ी देवता
पानी के पालक जलदेवता
आग के रक्षक अग्निदेव
हवा के चरवाहे वायुदेव ।।

73

रोआ ओमकेन सिंबोंगा
जी टेकाओकेन ओते एंगा
सोबेन कोले गोआरिजादपेआ
जोतोकोले बिनतीजादपेआ ।।

आत्मा के दाता परमेश्वर
जी टिकाने वाली धरती माता
हम तुम सबको गहारते हैं
हम सब से प्रार्थना करते हैं ।।

74

आपे सोबेन माराङ बोंगाको
ओड़ो:गे जोतो हुड़िं बोंगाको
नुतुमते का तेबा:जानको
चुण्डुलते का टो:जानको ।।

तुम सभी बड़े देवता
और भी सभी छोटे देवता
नाम से जिनतक हम नहीं पहुँच पाए
हमारे इंगित से जो छूट गए ।।

75

आलो ताबुपे हुड़िंजीओ:आ
आलो ताबुपे हांड़ाजीओ:आ
सोबेनगेले गोआरिजादपेआ
जोतोगेले बिनतीजादपेआ ।।

तुम छोटा मन न होना
तुम रुठामन न होना
हम सबको गुहारते हैं
हम सबसे विनती करते हैं ।।

76

नेआको ताबु तेला रुआड़ाएपे
नेआको ताबु आताङ रुआड़ाएपे
नेआको ताबु जोगाओ रुआड़ाएपे
नेआको ताबु जोतोन रुआड़ाएपे ।।

यह सब तुम वापस ले लो
यह सब तुम वापस ग्रहण करो
यह सब तुम जुगा लो
यह सब तुम जतन करो ।।

77

ने होड़ोआ: सेन होरा रे
ने परजाआ: सेन डारे रे
सोबेना: बुगिगेका ताइन
सोबेना: नापाएगेका ताइन ।।

इस आदमी के चलने के रास्ते
इस प्रजा के निकलने की राह
सब कुछ ठीक रहे
सब कुछ कुशल रहे ।।

78

आपे सोबेन बोंगाको तागाते
आपे जोतो देवता को तागाते
आले नेआगेले आर्जीताना
आले नेआगेले बिनतीताना ।।

तुम सभी देवों से
तुम सभी देवताओं से
हम यही अर्जी करते हैं
हम यही विनती करते हैं ।।

79

सारजोम साकाम नावा गाण्डुरे
ने दिआ सेंगेल सामाङरे
दुबको:पे, जारुको:पे
गोआरि ताले आयुमलेपे ।।

शाल पत्तियों के नए पीढ़े पर
इस दीया–अग्नि के समक्ष
तुम बैठ लो, विराज लो
हमारा गुहार सुन लो ।।

आपेआ: दया देंगाते
आपेआ: लेपेल उम्बुलते
कामि बुगिनगे सांगोमो:का
काजि नापाएगे सोतोगो:का ।।

80 तुम्हारी दया और सहयोग से
तुम्हारी संरक्षण--छाया में
हमारा काम सुसम्पादित हो
हमारा अनुष्ठान शुभ सम्पन्न हो।

ने दुकु सोंकोटोआते
ने नारा--दुरा जीआते
उबारतेले उबारो:का
सुकुहोराले साबनामेका ।।

81 इस दु:ख--संकट से
इस हताश मन से
हम बिल्कुल उबर जाएं
हम सुख का मार्ग पकड़ सकें ।।

जोआर ! जोआर ! जोआर !
सिंबोंगा, गोआरि हो गोआरि !
ओते एंगा, गोआरि हो गोआरि !
हाड़ाम होड़ोको, गोआरि हो गोआरि !!

82 जोहार ! जोहार ! जोहार !
परमेश्वर को जोहार ! जोहार !
धरती मां को जोहार ! जोहार !
पूरखे--पूर्वजों को जोहार ! जोहार !!

बोओंगानि: सिंबोंगा:नुतुमते मियाद डुम्बा उलिसाकामते: हिरचिजादा सारजोम साकामरे: दोड़ोमजादा। ती जोड़ाओ केआते: गोआरिताना ।

यजमान परमेश्वर के नाम से एक मिष्टान्न पर आम की पत्तियों से पानी छिड़कता है **शाल पत्र पर रखता है। हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हैं ।**

सिरमारेन सिंबोंगा
ओतेरेन ओतेएंगा
जोआरतानाञ, जोआरतानाञ
आयुमलेबेन, आतेनबेन ।।

83 आकाश के परमेश्वर
पृथ्वी की धरती माता
मैं जोहार करता हूँ , गुहार करता हूँ
तुम उसे सुनकर, उसका श्रवण करो ।।

सारजोम साकाम नावा गाण्डुरे
दुबको:बेन, जारू को:बेन
सायादालेबेन, सारतेआलेबेन
दुलाड़ालेबेन, देंगाआलेबेन ।।

84 शालपत्रों के नए पीढे पर
तुम बैठ लो, विराज लो
तुम हमें प्राण दो, सच्चाई दो
प्यार दो, सहयोग दो ।।

आलेदो काले--लेल दाड़िआबेना
आलेदोबेन लेल दाड़िआलेआ
आलेदो काले आयुमदाड़िआबेना
आलेदोबेन आयुम दाड़िआलेआ ।।

85 हम तुम्हें देख नहीं सकते
किंतु तुम हमें देख सकते हो
हम तुम्हें सुन नहीं सकते
किन्तु तुम हमें सुन सकते हो।।

जाओगे, जानाओगे
दुकुतान रें, सुकुतान रे
कामि–उदाम रे, जोम–नू रे
दुब–जाआरु रे, गितिः–दुडुम रे ।।

हेबेतादलेआबेन
हातारतादलेआबेन
हाम्बुदतादलेआबेन
गुंगुदतादलेआबेन ।।

आबेनगे जोनोम ओमकिन
आबेनग कोरोम तोलकिन
आबेनातेले उपानाकाना
आबेनरेगेले जामारुआड़ाना।।

आबेनले जोआरताना
आबेनले गोआरिताना
आबेनतेले उम्बुलाकाना
आबेनतेले चोतोराकाना ।।

एन हुलाङ फलना दिन
एन दिलाङ फलना चाण्डुः
आलेतालारेन फलना दो
आलेकिलिरेन होड़ोदो ।।

आएआः कामि पुराओ केआते
आपान उदाम चाबाकेआते
आले तालाआतेः दानाङेनजाना
आपेलोःतेः जामानजाना ।।

एन दुकुआते पारोमेन नागेन
एन बालाएआते उबारेन नागेन
मोड़े हागा, मोड़े कुपुल
जामाआकानाले, दुबाकानाले ।।

86
हर समय, प्रतिदिन
दुःख के समय, सुख के समय
काम–उद्यम में, खान–पान में
बैठने–बतियाने, लेटने–सोने में।

87
तुम हमें गोद में लिए हुए हो
तुम हमें कमर में बांधे हुए हो
तुम हमें बाहों में भरे हुए हो
तुम हमें छाती से चिपकाए हुए हो ।।

88
तुम ही जन्म देनेवाले हो
तुम ही कर्म देनेवाले हो
तुम्ही से हम उत्पन्न हुए हैं
तुम्ही में हमें वापस जाना है ।।

89
हम तुम्हें जोहार करते हैं
हम तुम्हारी गुहार करते हैं
हम तुम्ही से सुरक्षित है
हम तुम्ही से संरक्षित हैं ।।

90
उस दिन फलाने दिन
उस दिवस फलाने महीने
हमारे बीच का फलाना
हमारे गोत्र का व्यक्ति ।।

91
अपना काम पूरा करने के बाद
अपना उद्यम समाप्ति के बाद
हमारे बीच से छिप गया
तुम्हारे साथ जा मिला ।।

92
उस दुख से पार पाने के लिए
उसे बला से उबरने के लिए
पांच माई, पांच कुटुम्ब
हम जमा हुए, बैठे हैं ।।

93

सोना दाः, रूपा दाःते
हिरचि दारोमजादबेनाले
तिरपि दारोमजादबेनाले
जोआर दारोमजादबेनाले ।।

सोना पानी रूपा पानी से
छिड़का कर तुम्हारा स्वागत करते हैं
झिमक कर तुम्हारा स्वागत करते हैं
जोहार कर तुम्हारा स्वागत करते हैं।।

94

तिलमिंले तिलाबेनताना
जोबा बाले दोड़ोमाबेनताना
गोलांचि बा, आदोआ चाउलि
तोआ, दुबिला, पान–कसाइलि ।।

तुम्हें तिलके बीच अर्पित करते हैं
तुम्हें उड़हुलने फूल अर्पित करते हैं
तुम्हारे लिए गुलांची फूल, अरवा चावल
दूध, दूब घास, पान–कसैली ।।

95

लागोरा गाइ, गोतोम दिआ
आबेन नांगेनगे जुलताना
नावा किचिरिले ओमाबेनताना
तेलालेबेन, आताङलेबेन।।

दुधारू गाय का घी–दीया
तुम्हारे लिए ही प्रचलित है
तुम्हें नया वस्त्र देते हैं
इसे तुम स्वीकार करो, ग्रहण करो ।।

96

जोआर ! जोआर ! जोआर !
सिंबोंगा, गोआरि हो गोआरि !
ओते एंगा, गोआरि हो गोआरि !
हाड़ाम होड़ोको, गोआरि हो गोआरि !!

जोहार ! जोहार ! जोहार !
परमेश्वर को जोहार ! जोहार ! जोहार !
धरती मां को जोहार ! जोहार ! जोहार !
पुरखे–पूर्वजों को जोहार ! जोहार ! जोहार !!

एन तायोमते बुरू बोंगाः नुतुमते दोड़ोमकेआते गोआरिओःताना –

पहले की ही तरह पहाड़ी देवता के नाम से अर्घ्य देकर प्रार्थना की जाती है –

97

हे फालनाबुरू बुरू बोंगा
माड़ा बुरू, देसाउलि
आमोले जोआर जादमेआ
आमोले गोआरि जादमेआ ।।

हे फलना पहाड़ के पहाड़ी देव
माड़ादेव, देसाउली देव
हम तुम्हें जोहार करते हैं
हम तुम्हारी गुहार करते हैं।

एन लेकागे इकिर बोंगाः नुनुमते–

इसी तरह जल देवता के नाम से –

98

हे फलना इकिर इकिर बोंगा
आमोले जोआर जादमेआ
आमोले गोआरिजादमेआ
आयुमलेम, आतेनलेम ।।

हे फलना दह के जल देवता
हम तुम्हें भी जोहार करते हैं
हम तुम्हारी भी गुहार करते हैं
हमारी प्रार्थना सुनलो, क्षमा करके ।।

एन तायोमते हाड़ाम होड़ोकोआः नुनुमते–

इसी तरह पुर्खे–पूर्वजों के नाम से –

99
हे आलेआः हाड़ाम होड़ोको
हातु–दिसुम बाइकेनको
ओड़ाः–दुआर तुरूबकेनको
आपेओले गोआरिजादपेआ ।।

हे हमारे पुर्खे–पूर्वज
गाँव–देश बनाने वाले
घर–द्वार बनाने वाले
हम तुम्हे भी निहारते हैं।

100
गंगा गाड़ा आतोमरे
दिआ सेंगेल सामाङरे
दुबकोःपे, जारूकोःपे
आयुमलेपे, आतेनलेपे ।।

गंगा नदी के किनारे
अग्नि–दीप के समक्ष
तुम बैठो, विराजो
हमें सुनो, श्रवण करो ।।

टुण्डुरे काऊः–कुड़िदकोआः नुतुमते–

अंत में कौआ–चील इत्यादि के नाम से –

101
हे काउःनिः, कुड़िदनिः
तुयुनिः, तागाउनिः
आपेओपे देंगाकेना
आपेओपे गोड़ोमकेना।।

हे कौवे और चील
सियार और भेड़िए
तुमने भी मदद की थी
तुमने भी सहायता की थी ।।

102
एला नेरे जुड़ि–जुड़ि
एला नेरे पान्ति–पान्ति
दुबकोःपे, जारुकोःपे
गोआरितानाले, आयुमलेपे ।।

आओ यहां जुड़ो
आओ यहां पंक्ति में
तुम भी बैठो, विराजो
हम गुहारते हैं उसे सुनो ।।

एन तायोमते बोंओंगानिः लेटे बाइकेन तावा, पुड़ुः आर दिआ बागेकेआते सोबेन मिआद कालुः रेः जामाजादा। लेंगा तारानरेः गोःजादा आर काटाजाम्बाड़ाते सामाङलेआतेः तिंगुनताना। जिआनजानिः नुतुमकिआते जागारजादा –

इसके बाद मुख्य श्राद्धकर्त्ता मिष्टान्न पकाने का तवा, दोना और दीया छोड़कर बाकी सब कुछ एक पत्तल में जमा करता है। बाएं कंधे पर रखता है और उत्तर की ओर मुँह करके खड़ा होता है। मृतक को सम्बोधित करता है –

103
हे फलना
ओते एंगालोः ताइनमे
बुरू बोंगालोः ताइनमे
इकिर बोंगा लोः ताइनमे ।।

हे फलाना,
धरतीमाता के साथ रहो
पहाड़ी देवता के साथ रहो
जलदेवता के साथ रहो।।

एन तायोमते लेंगाते बिउरकेआते सिंगितुरो:ते: मेदजादा। जोम सा: तारानरे: गो:जादा ओड़ो: आपिसाए: जागारजादा –

हे फलना,
सिंबोंगालो: ताइनमे
ओड़ा: बोंगाकोलो: ताइनमे
पुरखा कोलो: ताइनमे ।।

एन तायोमते लेंगातेगे बिउरेन जानाते गो:तादा:को बान्दा जापा:रे: जोगाओजादा। तावाए: दाल रापुदजादा। दीआ दा:रे: टिपिउलजादा। रेआड़ान ताना‌ए: । नावा किचिरिते: पाटेनताना। इनि: हागा–कुपुलकोते आपिसा दुब तिंगुइतानलो: सांगिते काकालाओ: ताना –

सिंबोंगा गोआरि – गोआरि हो गोआरि।
ओते एंगा गोआरि–गोआरि हो गोआरि।
बुरू बोंगा गोआरि–गोआरि हो गोआरि।
इकिर बोंगा गोआरि–गोआरि हो गोआरि।
हाड़ाम होडाको गोआरि–गोआरि हो गोआरि।।

इसके बाद बाई ओर से घूमकर पूरब की ओर मुंह करता है। सामग्रियों को दाहिने कंधे पर लेता है और तीन बार उच्चरित करता है –

104
हे फलाना,
परमेश्वर के साथ रहो
गृह देवताओं के साथ रहो
पुर्खे–पूर्वजों के साथ रहो।।

इसके बाद बाई ओर से घूमकर कंधे पर की सामग्रियों को पानी के किनारे रखता है। तवे को फोड़ता है। दीये को पानी में बहाता है। नहाता है। नया कपड़ा पहनता है। कुटुंब– बिरादरों द्वारा उसे तीन बार उठाते–बैठाते हुए सम्मिलित स्वर में उच्चरित होता है–

105
सिंबोंगा को जोहार ! जोहार ! जोहार !
धरती माता को जोहार ! जोहार ! जोहार !
पहाड़ी देवता को जोहार ! जोहार ! जोहार !
जलदेवता को जोहार ! जोहार ! जोहार !
पुर्खे पूर्वजों को जोहार ! जोहार ! जोहार !!

होरा तुनुड़ाम रे (उम्बुल रा: रुआड़ा)

बोओंगा सानापाना को–

बोंगा बाइजानिआ: गुयु तुरुब नांगेन आपिआ तिरिल ओपादको आर दाबतेआ: बुसु:। सेंगेल, धुना, दा:। बोंगाइ:जानिआ: नाड़े: नातारेन होड़ो सागाते बोंगाओ:ताना –

हे आलेआते हिगाड़ाजान फालना
हे आलेआते बिनगाजान फालना
तिसिं दो मोड़े हागा हातुरेन
तिसिंदो कुपुल गंगा दिसुमरेन ।।

आम दांड़ाले उड़ुड़ाकाना
आम खोजारले पायाराकाना
इदि रुआड़ाले हिजु:आकाना
सुतु: रुआड़ाले सेटेराकाना ।।

लाइ: रेंगे:, दा: तेताङ
सिं सुबा, दारू सुबा
ओको रेगे मेना: मेआ
जां रेगेम जापागाकाना ।।

एसकार जी आकाल–बाकाल
हागा–कुपुल उम्बुल बेगर
बानो: जाएलो: दुबजारू
बानो: जेताएलो: लान्दाजागार ।।

राबाङते एकेलातान
जेटेते तायुरतान
चिमिनेम होनोर बिउरा?
चिमिनेम जालाम कोलादा ?

चौराहे पर (छाया वापसी)

पूजा सामग्री –

मृतात्मा की झोपड़ी निर्मित करने के लिए तीन केन्दू टहनियाँ और छप्पर छाने के लिए पुआल, आग, पानी और धुवन। मृतक के नजदीकी व्यक्ति की ओर से उद्‌बोधन –

106 हमसे बिछुड़ा फलाना
हमसे अलग हुआ फलाना
आज गाँव के पाँच भाई
आज देश के कुटुम्ब–बंधु ।।

107 हम तुम्हें ढूढ़ने निकले हैं
हम तुम्हें खोजने निकले हैं
तुम्हें वापस ले चलने आए हैं।
तुम्हें साथ लेने आए हैं।

108 भूखे पेट, पानी को तरसते
पेड़ के नीचे, वृक्ष तले
तुम जहाँ भी स्थित हो
तुम जहाँ भी दुबके हो।।

109 अकेला मन, अकबक प्राण
कुटुंब–बंधु छाया विहीन
किसी के साथ न उठना–बैठना
किसी के साथ न हँसना–बतियाना।।

110 ठंड से काँपते हुए
धूप से बिलखते हुए
तुम कबतक घूमते रहोगे ?
तुम कबतक भटकते रहोगे ?

111

नेतेञा चि हेनतेञाचि
ने मुलि कोते, हेन मुलि कोते ?
ने लेका उड़ुःतानलोः
ने लेका फ्रिकिरतानलोः ।।

इधर जाऊँ या उधर जाऊँ
यह रास्ता किधर को, वह रास्ता किधर को ?
इस तरह सोचते हुए
इस तरह चिंतित ।।

112

जाएको लेलकिञ रे
जेताएको चिनाकिञ रे
एला ने होड़ोदोएः बुलताना चि
एला ने परजादोएः बालुताना चि ?

कोई देख ले तो ?
कोई पहचान ले तो ?
यह आदमी नशे में हैं क्या ?
यह प्रजा पागल है क्या ?

113

मेनतेको काजिआञ तानरे
मेनतेको उकुताञतान रे–
ने लेका उड़ुः तानलोः
ने लेका पाहाम तानलोः।।

इस तरह लोग बोलते होंगे
इस तरह लोग बतियाते होंगे –
इस तरह सोचते हुए
इस तरह चिंतित –

114

होरा तुनुड़ामरेम टेकादाकाना
डारे दानाड़ारेम रोकाओआकाना
हातु सिमानरेले तेबाः नाम तादमेआ
टोला टुण्डुरेले सेटेरनाम तादमेआ ।।

तुम चौराहे पर टिके हो
तुम चौमुहाने पर रूके हो
गाँव की सीमा पर हमने तुम्हें पाया है
टोले के अंत में हमने तुम्हें पकड़ा है ।।

115

दांड़ा–दांड़ातेले तेबाः नामतादमेआ
खोजार–खोजारतेले सेटेरनाम तादमेआ
दो दोलाबु सेनोः रुआड़ा
दो दोलाबु बिरिद नाचुरा ।।

ढूंढ़ते हुए तुम्हें पाया है
खोजते हुए तुम्हें पकड़ा है
चलो अब वापस चलें
चलो अब वापस फिरें ।।

116

आम नागेन गे गंगा दाः
आम नागेन गे इलि माण्डि
आउ तोरसाआकादाले
आगु दाराआकादाले ।।

तुम्हारे लिए गंगा का पानी
तुम्हारे लिए इलि–भात
हम साथ लाए हुए हैं
हम संग लाए हुए हैं ।।

117

चिमिन दिनाते काम जोमाना
चिमिन माआते काम नूआना
ने ताबु जोमनोः लेम
मार ताबु नू नोःलेम ।।

तुम कितने दिनों तक भूखे
तुम कितने दिनों तक प्यासे
लो कुछ खा लो
लो कुछ पी लो ।।

118

काटा लागा, होड़ोमो रोगोद
मोलोङ बाल–बाल, मायोम हिंजि
सुसुताए नोः कोःमे ताबु
राड़ेः नोः कोःमे ताबु ।।

पैर की थकावट, देह का दर्द
माथे पर पसीना, खून पसीजना
तुम आराम कर लो थोड़ा
तुम्हारा शरीर ठंडाले थोड़ा ।।

119

एनातेबु सेनोः रुआड़ा
आबुआः जाओ ओड़ाःते
एनातेबु नाचुर रुआड़ा
आबुआः जानाओ रोसोमते ।।

तब हम वापस चलेंगे
अपने पुराने घर को
तब हम लौट चलेंगे
अपनी पुरानी झोपड़ी को ।।

120

ओड़ाःरेन ओड़ाः बोंगाको
आदिंरेन हाड़ाम होड़ोको
आमगेको लेल होराताना
आमगेको चिना दारोमताना ।।

घर के गृह देवता
अन्तस्थल स्थित पूर्वज
तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहे हैं
तुम्हारी ही राह देख रहे हैं ।।

121

मिद गाण्डुरे दुब नांगेन
मिद चाल्पारे जारू नांगेन
होड़ो होनको होरो नांगेन
मानोआ गांड़ाको जांगि नांगेन ।।

एक ही पीढ़े पर बैठने को
एक ही आसन पर विराजने को
मनुष्य के बच्चों की रक्षा को
मानव संतति की रखवाली को ।।

122

बोंगाजानकोलोः जामामे नांगेन
बांकोजानकोलोः मिसामे नांगेन
आम इदिले हिजुःआकाना
आम सुतुःले सेटेराकाना ।।

देवत्व प्राप्तों के साथ करने को
अनस्तिव प्राप्तों साथ मिलाने को
हम तुम्हें ले जाने आए हैं
हम तुम्हें साथ करने आए हैं ।।

123

आले तायोमते आलेआः होनगांड़ाको
आले देआते आलेआः जाइ–पुइको
आपेआः होराते पेड़ेःको नामेका
आपेआः डारेते सेंड़ाको नामेका ।।

हमारे पीछे हमारे बाल–बच्चे
हमारे पीछे हमारे नाती–पोते
वे तुम्हारे द्वारा शक्ति प्राप्त करें
वे तुम्हारे रास्ते बुद्धि प्राप्त करें ।।

124

आपे सेनहोराताद बुगिन होरा
आपे सेनगाण्डेताद नापाए डारे
आले ओतोङ नामेका
आले पिचा नामेका ।।

तुम्हारे द्वारा तय सुमार्ग का
तुम्हारे द्वारा तय सन्मार्ग का
हम अनुकरण कर सकें
हम पीछे चल सकें ।।

गापा हुलाङ जाएंको कुलिरे
मेआङ दिलाङ जेताएको कुदुमरे
एला एन होड़ो दोए: आदजाना चि
एला एन परजा दोए सोदजाना चि ।।

का काए: आदाकाना, रुआड़ालेनाए:
का काए: सोदाकाना, आचुरलेनाए:
ओड़ा: दुआर काए: रिड़िङाकादा
हातु दिसुम काए: आदाकादा ।।

सोबेनाः बुगिनगे
सोबेनाः नापाएगे–
मेनते होड़ोको काजीका
मेनते परजाको बाकांड़ाएका ।।

जोहार ! जोहार ! जोहार !
सिंबोगा, गोआरि हो गोआरि
ओते एंगा, गोआरि हो गोआरि
हाड़ाम होड़ोको, गोआरि हो गोआरि ।।

एन तायोमते गुयुरे सेंगेल को सोए: जादा। गुयु लोओ: तालारेगे एनता:रे मेना: हाड़ाम होड़ोकोरे मिद होड़ो मेनजादा – हे फालना, आमा: ओड़ा: लोताना । दोलाबु निरा।

हेड़ा–हेड़ाते साड़ितान पाल आर दातारोम रेआ: साड़िलो: सोबेन होड़ोको ओड़ा: तेको रूआड़ाताना।

दुआरता:रेको तिंगुनताना। हांडेदाकान दुआरको कोटो:जादा। "ओकोए ताको ?" मेनते बितार सागातेको कुलिओ:ताना । हिजु:आकान होड़ोको उदुबेनताना ।

125
कल को कोई पूछे यदि
परसों कोई जांचे यदि
क्या वह आदमी खो गया ?
क्या वह प्रजा गुम हो गयी ?

126
नहीं, वह खोया नहीं, वापस आया
नहीं, गुम हुआ नहीं, लौट आया
वह घर–द्वार भूला नहीं
वह गाँव–देश खोया नहीं ।।

127
उसके साथ सबकुछ ठीक है
उसके संग सबकुछ स्वस्थ है–
इस तरह लोग बोलें
इस तरह लोग बखानें ।।

128
जोहार ! जोहार ! जोहार !
परमेश्वर को जोहार ! जोहार ! जोहार !
धरती माता को जोहार ! जोहार ! जोहार !
पुर्खे–पूर्वजों को जोहार ! जोहार ! जोहार !

तदनन्तर झोपड़ी में आग लगा दी जाती है। झोपड़ी के जलने के बीच ही वहां उपस्थित अग्रज लोगों में से एक कहता है–हे फलाना तुम्हारा घर जल रहा है। चलो भागें।

रूक रूकर बजती फार पर हंसुआ की आवाज के साथ सारे लोग मृतक के घर वापस आते हैं।

द्वार पर खड़े होते हैं। बन्द दरवाजे को ठकठकाते हैं। "कौन?" इस तरह भीतर से पूछा जाता है। आगत लोग अपना परिचय देते हैं।

"चाएगाड़, चाम्पागाड़ रेनको। सुतिआम्बाए कुडुम्बाए, डोएसा–कुकुरा मुलितेले हिजु:ताना" मेनते। "सुकु चि दुकु ? बोरो चि बोरसा ?"
"सुकु जागारगे। सोबेन दुकुको गंगा गाड़ारेले आतु तुकाआदा।"
"एनकारेदो मार बोलोपे।" मेनजालो: दुआर निगो:ताना। दिआ जुलो:ताना। हाड़ाम होड़ोको माण्डाको पिचाताना।
"हे ए: बोलोजाना।" मेनजालो: ने नावा होड़ो ओड़ा:रेन पुरना पुर्खा कोलो:ते: उपुरूम रिकाओ:ताना।

"चाएगढ़, चम्पागढ़ के लोग। सुतिआम्बे, कोराम्बे, डोएसा–खुकरा होकर आ रहे हैं", कहते हुए। "सुख या दुःख? भय या भरोसा ?"
"सुख समाचार ही।
सारे दुख हमने गंगा में बहा दिए ।"
"अगर ऐसी बात है तो अन्दर आओ।" कहते हुए दरवाजा खोला जाता है। दीया जलाया जाता है बड़े–बुजुर्ग पदचिन्ह की जाँच करते हैं।
"हाँ, वह अन्दर आया।" कहते हुए इस नए व्यक्ति का परिचय घर के पुराने पुर्खों से कराया जाता है ।

129

हे सिरमारेन सिंबोंगा
ओतेरेन ओतेएंगा
सिंगि आर चाण्डु:किन
आपे पाँचोको तिंगु केआते ।।

हे आकाश के परमेश्वर
पृथ्वी की धरती माँ
सुरज और चाँद
तुम सबको साक्षी बनाकर ।।

130

ने फालना सिमानरेन
फालना बुरु, फालना इकिर
मांड़ा बुरु देसाउलि
फालना चाण्डी, फालना नागे।।

इस फलाने गाँव की सीमा के
फलाना पहाड़ी देवता, जल देवता
माड़ा बुरू देसाउलि
फलाना चण्डी, फलाना नाग देव ।।

131

ने ओड़ा:रेन पुरखा को
आलेआ: सिदा होड़ो को
हुड़िङ–मारां हागारेन को
पाउनीरेन को, परजारेन को ।।

इस घर के पुर्खे
हमारे प्रथम पूर्वज
छोटे–बड़े बिरादरी के
आश्रितजन, प्रजाजन।।

132

हासा–दा:ते बाइलेन
सेंगेल–होयोते टेकाओलेन
हासा होड़ोमो आलेतालारे
फालना नुतुमते साकिलेन ।।

मिट्टी–पानी से निर्मित
आग–हवा से रक्षित
मिट्टी का शरीर हमारे बीच
फलाने नाम से नामित ।।

133
ओतेरे कामि चाबाकेआते
दिसुमरे उदाम पुराओकेआते
दानाङजानाए: आलेआते
जामानजानाए: आपेलो:ते ।।

धरती पर कार्य समाप्ति के बाद
देश मे उद्यम पूर्ति के बाद
हमसे छिप गया
तुममें मिल गया ।।

134
ने होड़ोदो ओकोए तानि: ?
ओकोतागाते: हिजु:आकाना ?
काबु जामाइआ, काबु मेसाइआ–
मेनते आलोपे जागाराइआ ।।

यह आदमी कौन है ?
कहाँ से आया है ?
इसे साथ नहीं करेंगे, नहीं मिलाएंगे–
ऐसा तुम न कहना ।।

135
आबु हातु–ओड़ा:रेनि:गे
आबुआ: नाता बितारेनि:गे
हागाजामा किलिरेनि:गे
आबुआ: मायोम नाड़िरेनि:गे ।।

यह हमारे गांव–घर का ही है
यह हमारे नातेदारी का ही है
यह हमारे गोत्र का ही है
यह हमारे खून का ही है ।।

136
कामि उदामरे, दुबजारूरे
जोम–नूरे, गिति:दुडुमरे
मिआद गाण्डू , मिआद पाटी रे
तिसिंआते आपे सोंगेरे ।।

काम–उद्यम में, बैठने–बतियाने में
खान–पान में, लेटने–सोने में
एक पीढ़ा, एक चटाई में
तुम सभी साथ होगे ।।

137
हासा–होड़ोमो दा:, सेंगेल
आपे देंगालेद हेरेल
ओमाद पेआले, जिमादपेआले
रोआ इदि मेनते आले।।

मिट्टी का शरीर, पानी और आग
तुमने प्यार से हमें जो दिया था
वह तुम्हें वापस जिम्मा दे रहे हैं
सिर्फ बीज साथ ले जा रहे हैं ।।

138
हुड़िङ–माराङ हातु बितार
हागा–मिसि चेतान–लातार ।
कुपुल गंगा दिसुम रेन
पाउनि प्रजा गामाए रेन।।

छोटे–बड़े गाँव के भीतर के
भाई–बहन, ऊपर–नीचे
कुटुम्ब–बंधु देश के
आश्रित–प्रजा क्षेत्र की।।

139
सोबेनकोतेले आर्जीजादपेआ
जोतोकोतेले बिनतीजादपेआ
ने होड़ोताबु जामाइपे
ने प्रजाताबु मेसाइपे ।।
जोआर ! जोआर ! जोआर !

सब मिलकर अर्जी करते हैं
सभी मिलकर विनती करते हैं
इस व्यक्ति को अपने साथ रखो
इस प्रजा को अपने साथ करो ।।
जोहार ! जोहार ! जोहार !

ओड़ाः–राचारे

हेंदे, पुण्डि आर आराः हासाते उपुनिआ कूड़ तेआः माण्डोआहोन ओलोः ताना। बोंगा सानापाना को सिदालेकागे मेनदो लेटे माण्डि डुमाङ आपिआगे– सिंबोंगा, ओते एंगा ओड़ोः हाड़ाम होड़ोको नांगेन। बोंगा एनेटेः कड़ी 1 आते 39 जाकेद गाड़ा/डाड़ी बान्दा ताः लेकागे। एनाते आयार–

घर–आंगन में

काले, सफेद और लाल मिट्टी से चौकोन अल्पना लिखी जाती है। पूजा सामग्री पहले की ही तरह किन्तु मिष्टान्न पिंड तीन ही। परमेश्वर, धरती माता और पूर्वज के लिए। मंत्रपाठ कड़ी 1 से 39 तक नदी/डाड़ी/तालाब पर की ही तरह। इसके बाद–

140

तिसिंदो फालना हुलाङ
तिसिंदो फालना चाण्डुः
फालना ताकोआः ओड़ाः रे
फालना ताकोआः राचारे ।।

आज फलाने दिन
आज फलाने महीना
फलाने के घर पर
फलाने के आंगन में ।।

141

मोड़े हागा हातुरेन
कुपुल गंगा दिसुमरेन
हिजुः सेटेराकानाले
होपोर जापागाकानाले ।।

पाँच भाई गांव के
कुटुम्ब बंधु देश के
हम आ पहुँचे हैं।
हम पास आए हैं।।

142

ओतेरे कामि पुराओके तायोम
दिसुमरे उदाम चाबाके तायोम
आले तालाआते दानाङजान
आले बिताराते बोंगा बाइजान ।।

पृथ्वी पर काम पूरा करने के बाद
देश में उद्यम समाप्ति के बाद
हमारे बीच से अलग हुए
हमारे मध्य से देवता बने ।।

143

हासा होड़ोमो हासारे जिमाजान
दाः होड़ोमो दाःरे जिमाजान
सेंगेल होड़ोमो सेंगेल रे जिमाजान
होयो होड़ोमो होयोरे जिमाजान ।।

मिट्टी का शरीर मिट्टी में मिले
पानी का शरीर पानी में मिले
आग का शरीर आग में मिले
हवा का शरीर हवा में मिले –

144

फालना ताले राः रूआड़ा नांगेन
फालना ताले सुतुः रूआड़ा नांगेन
हाड़ाम होड़ोकोलोः जामाइ नांगेन
पुरखा परजाकोलोः जिमाइ नांगेन ।।

फलाने को वापस बुलाने के लिए
फलाने को वापस लाने के लिए
बूढ़े–पूर्वजों के साथ मिलाने के लिए
पुर्खे प्रजाओं के साथ करने के लिए ।।

145

हासा होड़ोमो होरोकेन बुरू बोंगा
दाः होड़ोमो जांगिकेन इकिर बोंगा
सेंगेल होड़ोमो गुपिकेन सेंगेल बोंगा
होयो होड़ोमो जुटिकेन होयो बोंगा ।।

मिट्टी–शरीर के रक्षक पहाड़ी देवता
पानी–शरीर के रक्षक जल देवता
आग–शरीर के रक्षक अग्नि देवता
हवा–शरीर के रक्षक वायु देवता ।।

146

होड़ोमो रे रोआ ओमकेन सिंबोंगा
होड़ोमो टेकाओकेन ओते एंगा
सोबेन गेले आर्जिजादपेआ
सोबेनगेले बिनती जादपेआ ।।

शरीर में आत्मा दायक परमेश्वर
शरीर के धारक धरती–माता
हम सबको अर्जी करते हैं
हम सबसे बिनती करते हैं ।।

147

सेंगेल बोंगा सामाङरे
उलि साकाम साकी रे
मोड़े हागा ताला रे
कुपुल गंगा जापाः रे ।।

अग्नि देव के समक्ष
आम की पत्तियों के साक्ष्य में
पाँच भाइयों के बीच
कुटुंब बंधुओं के पास ।।

148

उपाल बा पुकुरि सोना दाःते
ताड़ाए बा बान्दा रूपा दाःते
हिरचि दारोमजादपेआले
तिरपि दारोमजादपेआले ।।

कमल पोखरी के स्वर्ण जल से
पंकज पोखरी के रुपा जल से
छिड़काकर तुम्हारा स्वागत करते हैं
झिमकाकर तुम्हारी अगुआई करते हैं ।।

149

आलेलोः मोदखोन
आलेलोः बार घड़ी
दुबकोः ताबुपे
जारुकोः ताबुपे ।।

हमारे साथ एक क्षण
हमारे संग दो घड़ी
तुम आओ बैठो
तुम आओ विराजो ।।

150

ओड़ाःरेन ओड़ाः बोंगाको
आलेआः सिदा पुरखा को
आपेओले राःकुलजादपेआ
आपेओले कजिकुलजादपेआ ।।

घर के गृह देवता
हमारे प्रथम पुर्खे
हम तुम्हें भी बुलाते हैं
हम तुम्हें भी न्योतते हैं ।।

151

लुटुकुम हाड़ाम, लुटुकुम बुड़िआ
रीसा मुण्डा, मदरा मुण्डा
सिंगिराय, बिनराय ताकिन
दुखनसाय, रतनसाय ताकिन।।

लुटकुम बूढ़ा, लुटकुम बुढ़िया
रीसा मुण्डा, मदरा मुण्डा
सिंगराय और बिनराय
दुखनसाय और रतनसाय ।।

152 सिनगी दाइ, माकि दाइ
सालि दाइ, पारो दाइ
दासाकिर दाइ, चाम्पा दाइ
फूलो दाइ, जानो दाइ ।।

सिंनगी बहन, माकि बहन
साली बहन, पारो बहन
दसकिर बहन, चाम्पा बहन
फूलो बहन, जानो बहन ।।

153 राताङ बुरू, माराङ बुरू
आराः उलि, बिंदेआ बुरू
सोबेनगे माराङ बुरुको
ओड़ोः एटा हुडिङाःको ।।

हिम पर्वत, बड़ा पहाड़
अरावली, विंध्याचल
सभी बड़े पर्वतराज
और अन्य छोटे पहाड़ ।।

154 बाड़ामदाः, गंगा दाः
सिंदाः, नरम दा
सोबेन मापाराङ गाड़ाको
ओड़ोःएटाः हुपुडिङाःको

ब्रह्मपुत्र, गंगा नदी
सिंधु नदी नर्मदा नदी
सभी बड़ी–बड़ी नदियाँ
और अन्य छोटी नदियाँ ।।

155 सासाङ पिड़ि, गितिल पिड़ि
एकासि पिड़ि, तेरासि बादि
चाए गाड़, चाम्पा गाड़
सुतिआम्बाए, कुडुम्बाए ।।

हल्दी मैदान, मरू मैदान
एकासी मैदान, तेरासी समतल
चाएगढ़, चम्पागढ़
सुतिआम्बेगढ़ कोराम्बेगढ़ ।।

156 डोएसागाड़, कुकुरागाड़
रायगाड़, रतनगाड़
सिंबिर, मानबिर
बारेसाल, सेरेंदाःबिर ।।

डोएसागढ़, खुखरागढ़
रायगढ़, रतनगढ़
सिंह वन, मानवन
बारेसाल, साराण्डावन –

157 दांड़ा–दांड़ाते, दांड़ानाम लेदको
पिचा–पिचाते पिचा नामलेदको
हातु दिसुम बाइकेनको
डी–डुंगुरि तिंगुलेदको ।।

खोजते–खोजते पाए हुए
ढूंढ़ते–ढूंढ़ते प्राप्त किए
गांव–देश बनाने वाले
डीह–डोंगरी के निर्माता ।।

158 सोबेनले राः कुल जादपेआ
जोतोले तेला दारोम जादपेआ
आलेलोः दुबकोःपे ताबु
आलेलोः जारूकोःपे ताबु ।।

हम सबको बुलाते हैं
हम सबका स्वागत करते हैं
हमारे साथ आओ बैठो
हमारे संग आओ विराजो ।।

नाआः जाकेद आलेलोः लेललेन
तिसिं जाकेद आलेलोः चिनालेन
दानाङजान फालना ताले
बोंगा बाइजान फालना ताले ।।

आपे सानामाङ रेः तिंगुआकाना
आपे जानापाः रेः होपोराकाना
आपेलोः जामान नांगेन
आपेलोः मेसान नांगेन ।।

एला ने होड़ोदो ओकोए तानिः
एला ने परजा दो चिमाए तानिः
आबु हागारेनिः चि का चि
आबु मायोमरेनिः चि का चि ।।

एपेराङचिः हिजुःआकाना
सेपेगेद चिः सेटेराकाना–
मेनते आलोपे उडुःइआ
मेनते आलोपे पाहामा ।।

मिद गाण्डू रे दुबिपे ताबु
मिद चाल्पारे पान्तिपे ताबु
आपे नामेआः हाटिङाइपे ताबु
आपे तेलाएआः चुरूइआइपे ताबु।।

तिसिंआते जी दुकु सोबेन
तिसिंआते होड़ोमो पोए सोबेन
गंगा गाड़ा रेले आतुकेदा
जालाकार रेले बुआलकेदा ।।

हुमुलेन होड़ोमो ताले
सोबेनले रेआड़ा पार्चिकेदा
नोलादलेन मेद मुआड़ाताले
जोतोले आब आमिंकेदा ।।

159
अबतक हमारे साथ दिखाई देने वाला
आज तक हमारे संग पहचाने जाने वाला
फलाना जो हमसे छिप गया
फलना जो देवत्व को प्राप्त **हुआ** ।।

160
वह तुम्हारे सामने खड़ा है
वह तुम्हारे समक्ष उपस्थित है
तुम्हारे साथ मिलने के लिए
तुम्हारे संग जुमने के लिए ।।

161
भाइयो, यह आदमी कौन है ?
भाइयो, यह प्रजा कौन है ?
हमारी बिरादरी का है या नहीं ?
हमारे खून का है या नहीं ?

162
शायद झगड़ा करने आया है ?
क्या यह लड़ाई करने आया है ?–
इस तरह तुम न सोचना
इस तरह तुम न गुनना ।।

163
इसे एक साथ पीढ़े पर बैठाओ
इसे एक पंक्ति में आसन में बैठाओ
तुम्हें जो मिले इसे भी बांटो
तुम जो स्वीकारो इसे भी दो ।।

164
आज से मनके सारे दुख
आज से शरीर के सारे दर्द
हमने गंगा मे बहा दिए
हमने समुंदर में विसर्जित किए ।।

165
मलिन हमारा शरीर
हमने नहाकर साफ किया
स्याह हमारा चेहरा
हमने धोकर साफ किया ।।

आपेआः पेड़ेः, आपेआः पोरताब
आपेआः सेंड़ा, आपेआः दाड़ि
आले जाओगेले नामेका
आले जानाओले तेलाएका ।।

काले लेल दाड़िआपेरेओ
लेलजादलेआकोले मेनेका
काले चिना दाड़िआपेरेओ
चिनाःजादलेआकोले मेनेका ।।

एनलेकाते आलेआः जी कुड़ाम
सारतेरे टेकाओआकानका ताइन
एनलेकाते आलेआः मोचा जबान
सारिरे थीराकानकाताइन ।।

आपेआः होराते जे बुगिनाः
सोबेनले लेल दाड़िआका
आपेआः डारेते का बुगिनाः
सोबेनले बागे दाड़िआका ।।

हागाको ताला आले नांगेन
हिलाङ हेन्दो आलोका ताइन
कुपुलको बितार आले नांगेन
आड़ाः उड़ूः आलोका ताइन ।।

बुरू–पिड़ि, पीटि–पिड़ि
उकुता काजि आलोका ताइन
हागा कुपुल, परजा बितार
एदकान काजि आलोका ताइन ।।

बाबा एंगा, कोदे एंगा
उरिः एंगा, मेरोम एंगा
पोआआकानको ताइनका
पोसाआकानको ताइनका ।।

166
तुम्हारा बल, तुम्हारा प्रताप
तुम्हारी बुद्धि, तुम्हारा सामर्थ्य
हम हमेशा पाते रहें।
हम दैनंदिन प्राप्त करें ।।

167
तुम्हें न देख पाने पर भी
वे हमें देख रहे – ऐसा हम कहें
तुम्हें न पहचान पाने पर भी
वे हमें पहचान रहे – ऐसा हम बोलें ।।

168
इस तरह हमारे मन–प्राण
सत्य में टिके रहें
इस तरह हमारे बोल–वचन
सच्चाई में स्थिर रहें ।।

169
तुम्हारी राह में जो शुभ हो
वह हम देख सकें
तुम्हारी डगर पर जो अशुभ हो
उसे हम त्याग सकें ।।

170
भाइयों के बीच हमारे प्रति
कोई घृणा भाव न रहे।
कुटुम्बों के बीच हमारे प्रति
कोई हिचक सोच न रहे ।।

171
मेला–मैदान, बाजार–टांड़
शिकायत की बात न रहे
कुटुम्ब–बन्धु, प्रजा के भीतर
अकथ्य कथन न रहे ।।

172
धान माँ, मडुआ माँ
गौ माता, बकरी माता
सदा बढ़ोत्तरी को पाएं
हमेशा वृद्धि को पाएं ।।

173

सा सोमाए बुगिका ताइन
खिति किरसि बुगिका ताइन
दारू–सिं बुगिका ताइन
चेंड़े–चिपुरूद बुगिको ताइन ।।

ऋतु प्रवर्त्तन ठीक रहे
खेती–कृषि ठीक रहे
पेड़–पौधे ठीक रहें
पंछी पखेरू ठीक रहें ।।

174

उपलबा पुकुरि
ताड़ाए बा बान्देला।
पेरे:आकानका ताइन
पारिड़िआकानका ताइन ।।

कमल फूल पोखरी
पंकज फूल बांध
हमेशा भरे रहें
सर्वदा बहते रहें ।।

175

आले नांगेन आड़ाः–साकाम
आले नांगेन बा जो
लिडुआकानका ताइन
जोपोदाकानका ताइन ।।

हमारे लिए साग–पात
हमारे लिए फूल–फल
हमेशा झुके रहे
हमेशा लदे रहें।

176

आलेआः सेन होरा रे
आलेआः बिरिद डारे रे
तोद आलोका ताइन
तुगुड़ि आलोका ताइन ।।

हमारे चलने के रास्ते में
हमारे निकलने की राह पर
कोई ठेस न रहे
कोई ठोकर न रहे ।।

177

सान आगुले सेनो:रे
साकाम हे:ले बिरिद रे
कुला बोतोङ आलोका ताइन
बिं बोरो आलोका ताइन ।।

जब हम लकड़ीं लाने जाएं
जब हम पंत्तियां तोड़ने जाएं
बाघ का डर न रहे
साँप का भय न रहे ।।

178

रूआ राबाङ आलोका ताइन
उला–झाड़ा आलोका ताइन
पाटि–जाड़ाः आलोका ताइन
पारकोम–जाड़ाः आलोका ताइन।।

ज्वर–कंपकंपी न रहे
कै–दस्त न रहे
चटाई–पकड़न न रहे
खटिया–जकड़न न रहे ।।

179

हाए–एआङ आलोका ताइन
हाए–आपाङ आलोका ताइन
सोबेनाः बुगिगेका ताइन
सोबेनाः नापाएगेका ताइन ।।

"हाय माँ" न रहे
"हाय बाप" न रहे
सबकुछ ठीक रहे
सबकुछ स्वस्थ रहे ।।

180

आले तालाआते हिसिंगा चेंटा
आले तालाआते खींसि लोभ
रेएदाते हद गिड़िओःका
बुटाआते तुद उतारोःका।।

हमारे बीच से ईर्ष्या–द्वेष
हमारे बीच से क्रोध–लोभ
जड़ से कट जाए
मूल से उखड़ जाए ।।

181

आले आलेरे हागा दुलाड़ा
आले आलेरे कुपुल सुगाड़ा
सेतोमाकानगे ताइनका
लिंगिआकानगे ताइनका ।।

हममें परस्पर बिरादरी दुलार
हममें आपस में कुटुंबी प्यार
हमेशा झरता रहे
हमेशा बहता रहे ।।

182

नेरे हिजुःआकान बोंगाको तागाते
आले नेआगेले सानाङ ताना
नेरे सेटेराकान देवताको तागाते
आले नेआगेले आसाराएः ताना ।।

यहाँ आए हुए देवों से
हम यही कामना करते हैं
यहाँ आगत देवताओं से
हम यही आशा रखते हैं ।।

183

जोहार ! जोआर ! जोहार !
सिंबोंगा गोआरि ! गोआरि हो गोआरि !
ओते एंगा गोआरि ! गोआरि हो गोआरि!
हाड़ाम होड़ोका गोआरि ! गोआरि हो गोआरि !

जोहार ! जोहार ! जोहार !
परमेश्वर को जोहार! जोहार, जोहार !
धरती माँ को जोहार! जोहार, जोहार !
पुर्खे पूर्वजों को जोहार! जोहार, जोहार !

उयुःआकानिः तिंगु राकाब

(एनजालोः तेआराकान गोआरि माण्डि एनताःरे दुबाकान हागा कुपुलको रे हाटिंओःताना। आरदासतान होड़ोःतालारेः दुबोः ताना। कुमाते आर मिआद हागाकिन सेन होपोर जाःइआ। पांड़ा बोंगा जादा–)

गिरे हुए को खड़ा करना

(तब तक तैयार प्रसाद भात वहाँ बैठे हुए कुटुम्ब–बुधुओं के बीच वितरित होता है। श्राद्धकर्त्ता के मामा और बिरादरी में से कोई व्यक्ति उसके पास आते हैं। पाहन उच्चरित करता है–)

184

सिरमारेन सिंबोंगा
ओतेरेन ओते एंगा
बुरू बोंगा, इकिर बोंगा
ओड़ाःरेन ओड़ाः बोंगाको ।।

आकाश के परमेश्वर
पृथ्वी की धरती माँ
पहाड़ी देव, जल देवता
घर के गृह देवतागण ।।

185

मोंडे हागा हातुरेन
कुपुल गंगा दिसुमरेन
नेरेले जामाआकाना
नेरेले हुण्डिआकाना ।।

पाँच भाई गाँव के
कुटुंबगण देश के
हम यहाँ जमा हुए हैं
हम यहाँ एकत्र हुए हैं ।।

186

ने उयुगाकान हागा ताले
ने हीनाकान कुपुल ताले
निः तिंगु रुआड़ाइ नांगेन
निः चुलु राकाबि नांगेन।।

यह गिरा हुआ भाई
यह हीन हुआ कुटुम्बी
इसे फिर से खड़ा करने को
इसे प्रोत्साहित करने को ।।

187

नाआः जाकेद निआः ओड़ाः दुआर
तिसिं जाकेद निआः आंका–राचा
हुमुआकान ताइकेना
हिलाङाकान ताइकेना ।।

अब तक इसका घर–द्वार
आज तक इसका आंगन बाहर
मलिन पड़ा हुआ था
घृणित पड़ा हुआ था ।।

188

होड़ोमोएः नोलादलेना
ताराने: तोरोएःलेना
काटाएः दुड़ालेना
तालकाएः लोसोदलेना ।।

शरीर में कालिख थी
कंधों में राख थी
पैरों में धूल थी
तलवों में कीचड़ था ।।

189

बुरूपिड़ि पीटिपिड़ि
हातु–दुनुब बाइसी रे
हिलाङ–उकुता ताइकेना
हेन्दो चर्चा ताइकेना ।।

मेला मैदान, बाजार–टांड़
ग्राम–सभा बैठकों में
घृणा आलोचना थी
अवहेलना चर्चा थी ।।

190

हुड़िं जी, बोओः तिरूब
हांड़ा जी, नारा दुरा
खूंटआतेः बिनगालेना
गोंटोआतेः हिगाड़ालेना ।।

छोटा मन, सिर झुका हुआ
लाचार मन, गिरा तन
खूंट से यह अलग था
गोष्ठी से यह बिलग था ।।

191

नीलोः दुबजारू का
नीलोः कुलि–कुदाम का
दुकु चेतान दुकुरेगे
निदा सिंगि पारोम लेना ।।

इसके साथ बैठना–बतियाना नहीं
इसके साथ पूछ–ताछ नहीं
दुख पर दुख में ही
इसके रात दिन बीते ।।

192

तिरिंदो मोंड़े हागाको ताला
तिसिं दो सोबेन कुपुलको ताला
दुकु गंगा रे आतुजाना
बिपति जालाकार रे बुआलजाना ।।

आज पाँच भाइयों के बीच
आज सभी कुटुम्बों के बीच
वे सारे दुख गंगा में बह गए
विपत्तियाँ समुदर में विसर्जित हुईं ।।

193

होड़ोमो नोलाद पार्चिजाना
तारान तोरोएः आमिंजाना
काटा दुड़ा कोटाबजाना
तलका लोसोद चापिजाना ।।

शरीर की कालिख साफ हुई
कंधे की राख धुल गई
पैरों की धूल झड़ गई
तलवे का कीचड़ धुल गया ।।

194

तिसिंआते ने होड़ो नांगेन
जेतान हिलाङ आलोको ताइन
गापाआते ने परजा नांगेन
जेतान हेन्दो आलोका ताइन ।।

आज से इस आदमी के लिए
कोई घृणा न रहे
कल से इस प्रजा के लिए
कोई अवहेलना न रहे ।।

195

ने होड़ो तिसिं तिंगु रूआड़ाओःताना
ने प्रजा तिसिं चुलु राकाबोताना
नी नांगेन सोबेनाः बुगिगेका ताइन
नी नांगेन जोतो नापाएगेका ताइन ।।

इस आदमी को हम फिर से खड़ा करते हैं।
इस प्रजा को हम फिर से उठा रहे हैं
इसके लिए सबकुछ ठीक रहे
इसके लिए सबकुछ स्वस्थ रहे।।

196

जांताः, जेता ताः
नेआ काजि राकाब रेदो
जाए ताः जेताए ताः
नेआ बाकांड़ा बिरिद रेदो ।।

किसी जगह, कहीं पर
यह बात उठे अगर
किसी के यहाँ, किसी के पास
यह मामला उठे अगर ।।

197

ने ओड़ाः रोसोम रे
ने खूंट गुसुटि रे
जेतान हिलाङ बानोःआ
जेतान हेन्दो बानोःआ ।।

इस घर झोपड़ी से
इस खूंट–गोष्ठी से
कोई घृणा भाव नहीं
कोई शिकायत नहीं ।।

198

सोबेनाः बुगिन गे
सोबेनाः नापाए गे –
मेनतेले काजिका
मेनतेले उदुबेका ।।

सबकुछ ठीक है
सबकुछ स्वस्थ है –
ऐसा हम बोलें
ऐसा हम बतियाएँ ।।

199 जोआर ! जोआर ! जोआर !
सिंबोंगा गोआरि ! गोआरि हो गोआरि !
ओते एंगा गोआरि ! गोआरि हो गोआरि !
हाड़ाम होड़ोको गोआरि ! गोआरि हो गोआरि !!

सासाङदिरि ता:रे
(दिरि राकाब)

बांगाइजान होड़ोआ: नुतुमते सासाङ दिरि रे दिरि बिल/बिद/राकाब चुकाओआ काना । एनता:को जो: पारचिकेआते दिरिरे सासाङ गोसोगो:ताना। एन होड़ोआ: नुतुमते आगुआकान किचिरिकोते दापालो:ताना। हासा/जाङबा मेना: चुका: दिरिलातार रे "तुञ" आदेरो: ताना। बोंगा सानापानाको –दा:, सेंगेल, धुना–सिंदुरि इलि रासे। बोंगा एनेटे: गाड़ा/बान्दाता:/ओड़ा: राचाता: लेकागे। (कड़ी 1–39 हावि:) आयारते रेआ: बोंगा –

200 तिसिं दो फालना हुलाङ
तिसिं दो फालना चाण्डु:
फालना हातु बितार रे
फालना मौजा सिमान रे ।।

201 मोड़े हागा हातुरेन
कुपुल गंगा दिसुम रेन
हिजु: सेटेराकानाले
होपोर जापागाकानाले ।।

202 आले तालाआते बोंगा बाइजान
आले बिताराते दानाङजान
फलनाआ: नुतुमते
इनिआ: मानातिं रे ।।

जोहार ! जोहार ! जोहार !
परमेश्वर को जोहार ! जोहार ! जोहार !
धरती माता को जोहार ! जोहार ! जोहार !
पुर्खे पूर्वजों को जोहार ! जोहार ! जोहार !!

सासाङदिरि के पास
(पत्थल गड़ी)

मृतक के नाम से सासानदिरि में पत्थर गाड़ा जा चुका है। पत्थर के आसपास झाड़–बुहार कर पत्थर पर हल्दी लगाई जा रही है। उस पर उस आदमी के नाम से लाए गए कपड़े बिछाए जा रहे हैं। "अस्थि फूल" रखा चुक्का पत्थर के नीचे "तीर मारकर" सरकाया जाता है। पूजा सामग्री–पानी, आग, धुवन–सिंदूर और इलि का रस। पूजाआरंभ नदी/बांध/घर–आंगन की ही तरह। (कड़ी 1–39 तक) उसके आगे का मंत्र–

आज फलाना दिन
आज फलाना महीना
फलाना गाँव में
फलाना मौजा की सीमा में ।।

पाँच भाई गाँव के
कुटुंब–बंधु देश के
हम आए हुए हैं
हम एकत्र हुए हैं ।।

हमारे बीच से जो देव बन गया
हमारे बीच से जो छिप गया
उसके नाम से
उसकी स्मृति में ।।

आबेनाः उदुब होराते
आबेनाः चुण्डुल डारेते
फालना हातु बितार रे
फालना मौजा सिमान रे ।।

203 तुम्हारे बताए रास्ते से
तुम्हारे इंगित मार्ग से
फलाना गाँव में
फलाना मौजा में ।।

फालना ताकोआः ओडाः रे
फालना ताकोआः राचारे
फालना ताकिनाः होन
फालना ताकिनाः जाइ ।।

204 फलाना के घर
फलाना के आंगन मे
फलाना की संतान
फलाना की संतति ।।

हाड़ाम होड़ोकोलोः जामाजाइलो
पुर्खा होड़ोकोलोः मेसा जाइलोः
ने दिरिले राकाब जादा
ने चिनाले तिंगुजादा ।।

205 उसे पुर्खे–पूर्वजों के साथ मिलाने के साथ
उसे पुर्खों के साथ मिलाने के साथ
हम पत्थर खड़ा कर रहे हैं
हम एक चिन्ह स्थापित कर रहे हैं ।।

ने दिरि रानाकाब ताले
ने चिना तिनिंगु ताले
जूगु जूगु ताइनोः का
जानाओ जानाओ थीराकानका ।।

206 हमारे द्वारा खड़ा किया गया यह पत्थर
हमारे द्वारा स्थापित यह चिन्ह
युग–युग तक बना रहे
हमेशा के लिए स्थिर रहे ।।

जाए नेआको लेले रे
जेताए–नेआको चिनाए रे
ने होड़ो दो ने हातुरेनिःगे
ने परजा दो ने मौजा रेनिः गे ।।

207 जो कोई इसे देखे
जो कोई इसे पहचाने
हाँ यह आदमी यही था
यह प्रजा यहीं की थी ।।

मेनतेको काजीका
मेनतेको कुदुमेका
इनिआःको चर्चाएका
इनिआःको बाकांड़ाएका ।।

208 इस तरह लोग बोलें
इस तरह लोग बतियाए
उसकी लोग चर्चा करें
उसका लोग बखान करें ।।

ने होड़ोआः होरा ते
ने परजाः डारेते
गोटा हातु मासाकालोःका
गोटा दिसुम उनाओःका ।।

209 इस आदमी के माध्यम से
इस प्रजा के द्वारा
सारा गाँव प्रकाशित हो
सारा देश जाना जाए ।।

210

हातु बाइदेंगाकेन होड़ो मेनते
दिसुम बाइः गोड़ोमकेन परजा मेनते
खुटकटी होरोकेन होड़ो मेनते
भुंइहरी जांगिकेन परजा मेनते ।।

गाँव के निर्माण में सहयोगी
देश के गठन में सहयोगी
खुटकटो बचाने वाला आदमी
भुंइहारी का रखवाला आदमी ।।

211

मुण्डाहोन चि कुलाहोन
सांता होन चि निलिहोन
मेने काजि सरतेओःका
मेने बाकांड़ा सारिओःका ।।

मुण्डा की संतान, बाघ की संतान
संताल की संतान, बर्रे की संतान
यह बात सच प्रमाणित हो
यह बखान सही साबित हो ।।

212

कुरूमुटु कामि उदाम रे
गेरोल–मेरोल दांड़ादुतामरे
बाल बाल दाःएः जोरोलाः
होड़ोमो मायोमेः रोओड़ोलाः ।।

काम उद्यम में कड़ी मेहनत करनेवाला
खोज–खबर लेने में मन लगाने वाला
उसने पसीना बहाया था
उसने खून सुखाया था ।।

213

हाड़ामकोलोः हाड़ाम लेका
होनेकोलोः होन लेका
सोबेनकोलोः बुगिगे
सोबेनकोलोः नापाएगे ।।

बूढ़ों के साथ बूढ़ों–सा वर्ताव
बच्चों के साथ बच्चों सा व्यवहार
सबके साथ अच्छा संबंध
सबके साथ सदाचार ।।

214

सोबेनको सुकुआइताइकेना
जोतो को रासिकाइताइकेना
एनका इनिआः जोआर जागार
एनका इनिआः सुसार–बासार ।।

वह सबको पसंद आता था
उससे सबकोई खुश थे
ऐसा था उसका बात–व्यवहार
ऐसा था उसका सेवा भाव ।।

215

हागाकोलोः देंगा–देपेंगा
कुपुलकोलोः ओम–ओपोम
दुकु–सुकु रे कुलि–कुपुलि
रूआ–राबाङरे हिरा–हिपिरा ।।

भाइयों के साथ सहयोगभाव
कुटुंबों के साथ आदान–प्रदान
दुख–सुख में परस्पर चिंता
रोग–बीमारी में देख–भाल ।।

216

बुरू– पिड़ि, पीटि–पिड़ि रे
चि ताबु मेने होड़ो
सुसुन आकाड़ा, काराम आकाड़ा रे
मार ताबु मेने होड़ो ।।

मेला मैदान, बाजार टांड़ में
"कहिए कैसे हैं ?" कहनेवाला
नाच अखरा, करम अखरा में
"आप पहले" कहनेवाला ।।

हे रेदो हे, कारेदा का
सारते काजिरे तिंगुन होडा
राजा सिपाइ, दिकु देवान
जेताए का बोरोआ होड़ो ।।

काजिकेदाः कामी होड़ो
एटेः केदाः टुण्डुइ होड़ो
दुकु दुदुगार बिपत्ति ताला
आपानरे तिंगु केटेःन होड़ो ।।

हातु रे जान काजि- कापाजिरे
दिसुम रे जान जागार रेपेः रे
ताला रेगे जागारे होड़ो
बापाइ होरा दाड़ाए होड़ो ।।

काजि ताएः का थेर गिड़िओः होड़ो
सोबेनको मानातिंङि होड़ो
सारू साकाम दाः लेका
जेता साः का लोटेन होड़ो ।।

एनलेकान होड़ोआः नुतुमते
एनलेकान परजाआः उम्बुलते
तिंगुआकान ने दिरि दो
साकिआकान ने दिरि दो ।। –

मेनते सोबेनको काजीका
मेनते जोतो को बाकांड़ाएका
जेगे नेतेको सेन पारोमा
ओकोएगे नेतेको चांगा ताड़ोमा ।।

हातुरेन हाड़ाम होड़ोको
ओड़ाःरेन सिदा पुरखा को
ने होड़ो ताबु जामाइपे
ने परजा ताबु मेसाइपे ।।

217
हॉ तो हॉ, नहीं तो नही
सच्चाई पर अड़ने वाला
राजा–सिपाही, दिकु–देवान
किसी से नहीं डरने वाला ।।

218
जो कहा, करनेवाला
जो शुरू किया, समाप्त करने वाला
दुख की आंधी, विपत्ति के बीच
अपने पर खड़ा रहनेवाला।।

219
गाँव में किसी बाद–विवाद में
देश में किसी बात–बेबात में
तटस्थ बात बोलनेवाला
बीच का रास्ता निकालने वाला ।।

220
जिसकी बात अस्वीकार्य नहीं
सर्वसम्मानित आदमी
सारू की पत्तियों पर पानी की तरह
कहीं नहीं लटकनेवाला आदमी ।।

221
उस तरह के आदमी के नाम पर
उस प्रकार की प्रजा का प्रतीक के रूप में
खड़ा यह पत्थर
साक्षी यह पत्थर ।। –

222
इस तरह सब लोग बोलें
इस तरह सबलोग बखानें
जो भी इधर से चलकर पार हो
जो भी इधर से कदम बढ़ाएँ ।।

223
गाँव के बूढ़े बुजूर्ग
घर के पूर्वज–पुर्खे
इस आदमी को तुम साथ करो
इस प्रजा को तुम संग करो ।।

224

मिद गाण्डू मिद चालपारे
मिद जाटि, मिद पाटि रे
निओ ताबु दुबीपे
निःओ ताबु पांती पे ।।

एक पीढ़ा, एक बैठक में
एक चटाई, एक पटिया में
इसे तुम साथ बैठाओ
इसे तुम पांति में रखो ।।

225

आपे ओकोआगेको ओमापेआ
आपे ओकोआगेको चेदापेआ
निःओ हाटिंआइपे ताबु
निःओ चुरूइःआइपे ताबु ।।

लोग तुम्हें जो कुछ दें
लोग तुम्हें जो कुछ बांटे
उसे तुम इसे भी दो
उसे तुम इसे भी बांटो ।।

226

आले आपेआः होनगाड़ाको
आले आपेआः जाइपुइको
सोबेनकोते होरोलेपे
सांगिपाति जांगिलेपे ।।

हम तुम्हारे बाल–बच्चे
हम तुम्हारे नाती–पोते
सब मिलकर हमारी रक्षा करो
सब मिलकर हमें बचाओ ।।

227

आलेआः कामि उदाम रे
आलेआः दांड़ा दुताम रे
जाओगे हानारा होबाओःका
जाओगे बाड़ातिं होबाओःका ।।

हमारे काम उद्यम में
हमारी खोज–खबर में
सर्वदा बढ़ोत्तरी बनी रहे
हमेशा उन्नति बनी रहे ।।

228

दिसुमाते रिंगा आकाल
गामाएआते दुकु बिपति
सांगिनरेगे ताइनोःका
पारकारेगे ताइनोः का ।।

देश से भुखमरी–अकाल
दुनिया से दुख–विपत्ति
दूर में ही रहे
फरक में ही रहें ।।

229

रूआ राबाङ आलोका ताइन
उला–झाड़ा आलोका ताइन
माराङ दुकु आलोका ताइन
मारी दुकु आलोका ताइन ।।

रोग–बीमारी न रहे
कै–दस्त न रहे
चेचक–हैजा न रहे
महामारी न रहे ।।

230

पाटि जाड़ाःआलोका ताइन
पारकोम जाड़ाः आलोका ताइन
हाए एआङ आलोका ताइन
हाए आपाङ आलोका ताइन ।।

चटाई जकड़न न रहे
खाट पकड़न न रहे
"हाय माँ" न रहे
"हाय बाप" न रहे ।।

231

ओको सागातेगे दुकु हिजुगा
एनसाः तेगे बिउररूआड़ाका
ओको सागातेगे मारि सेटेराः
एनसाः तेगे सेकोर रूआड़ाका ।।

बीमारियाँ जिधर से आए
उधर ही वापस लौट जाएं
विपत्तियाँ जिधर से पहुँचे
उधर ही वापस चली जाएँ ।।

232

आलेआः सेनहोरा रे
आलेआः सेनडारे रे
तोद आलोका ताइन
तुगुड़ि आलोका ताइन ।।

हमारे चलने के रास्ते में
हमारे निकलने की राह पर
कोई ठेस न रहे
कोई ठोकर न रहे ।।

233

सान आगुले सेनोः रे
साकाम हेःले विरिद रे
कुला बोरो आलोका ताइन
बिं बोतोङ आलोका ताइन ।।

जब हम लकड़ी लाने जाएं
जब हम पत्तियाँ तोड़ने जाएं
बाघ का डर न रहे
साँप का भय न रहे ।।

234

ओते हासा बुगिगेका ताइन
होयो दाः बुगिगेका ताइन
रेएद रानु बुगिगेका ताइन
सा सोमाए बुगिगेका ताइन ।।

धरती–मिट्ठी ठीक रहे
हवा–पानी ठीक रहे
जड़ी–बूटी ठीक रहे
ऋतु–चक्र ठीक रहे ।।

235

उपाल बा पुकुरि
ताड़ाए बा बान्देला
पेरेःआकानका ताइन
परिड़िआकान का ताइन ।।

कमल फूल पोखरी
पंकज कली बांध
हमेशा भरी रहे
सर्वदा छलकता रहे ।।

236

बाबा एंगा, कोदे एंगा
उरिः एंगा, मेरोम एंगा
पोआआकानको ताइनका
पोसाआकानको ताइनका ।।

धान माँ, मडुआ माँ
गौ माँ, बकरी माँ
सदा बढ़ोत्तरी को पाएँ
सदा वृद्धि को प्राप्त करें ।।

237

नेरे हिजुआकान आपे बोंगाकोआते
नेरे सेटेराकान आपे देवताकोआते
ओड़ाःरेन हाड़ाम होड़ोकोआते
रोसोम रेन पुरखा–परजाकोआते ।।

यहाँ आए देवताओं से
यहाँ उपस्थित देवों से
घर के बूढ़े–बुजुर्गों से
झोपड़ी के पूर्वज–पुर्खों से ।।

238

मोड़े हागा हातुरेन
कुपुल गंगा दिसुमरेन
नेआगेले सानाङ ताना
नेआगेले आसाराएःताना ।।

पाँच भाई गाँव के
कुटुंब बंधु देश के
हम यही कामना करते हैं
हम यही आशा करते हैं ।।

239

जोआर ! जोआर ! जोआर !
सिंबोंगा गोआरि ! गोआरि ! गोआरि !
ओते एंगा गोआरि ! गोआरि ! गोआरि!
हाड़ाम होड़ोको गोआरि ! गोआरि ! गोआरि!!

जोहार ! जोहार ! जोहार !
सिंबोंगा को जोहार ! जोहार ! जोहार !
धरती–माता को जोहार ! जोहार ! जोहार !
पुर्खे–पूर्वजों को जोहार ! जोहार ! जोहार!

❑❑❑

जुड़िओः पुथिको / संदर्भ सूची SELECTED BIBLIOGRAPHY

Bodding, P.O
Traditions and Institutions of the Santals. Oslo (N.W. Brogess), 1942.
Census of India 1991.
Series 1, Paper 1 of 1995. Religion. New Delhi (Gov. of India),1995.
Dalton, E.T.
Descriptive Ethnology of Bengal.
Calcutta (Firma K.L.Mukhopadhyay), 1960 (Reprint).
Elwin, V.
Myths of Middle India. Bombay (OUP), 1952.
Tribal Myths of Orissa. Bombay (OUP), 1954.
Religion of an Indian Tribe. Bombay (OUP),1955.
Myths of Northeastern Frontier of India. Shillong (NEFA), 1958.
Good, W.G.
Religion Among the Primitives. London (Free Press), 1964.
Griffith, R.T.
Vedic Hymns. Varanasi (Motilal Banarsidas), 1963
Hoffmann, J.
Encylopaedia Mundarica, 16 vols.
New Delhi (Gian Publ.), 1993 (Reprint).
Kullu, P.
Kharia Dharam aur Sanskriti ka Vishleshan. Ranchi (Satya Bharati), 1988.
Leslie, C.
Anthropology of Folk Religion. New York (Vintage Books), 1960.
Levi-Strauss, C.
The Savage Mind. Chicago (Univ. of Chicago Press), 1964.
McDugal, J.
Land or Religion. New Delhi (Manohar), 1985.
Majumdar, D.N.
Affairs of a Tribe. Lucknow (Folklore Institute), 1950.
Malinowski, B.
Magic, Science and Religion. New York (Doubleday), 1954.
Mander, J.
In the Absence of the Sacred. San Francisco (Sierra Club), 1991.
Ponette, P.
Singbonga and the Spirit World of the Mundas.
Ranchi (Catholic Press), n.d.
Roy, S.C.
The Oraon Religion and Customs. Ranchi (Man in India Office), 1915.
Mundas and Their Country. Ranchi (Man in India Office), 1912.
Troisie, J.
Tribal Religion. New Delhi (Manohar), 1978.
Van Exem, A.
The Religious System of the Munda Tribe. Ranchi (Satya Bharati), 1982.

ओओलकिना: उनुरूम / लेखक परिचय

RAM DAYAL MUNDA

BIRTH : Vill. Diuri. P.O. Tamar, Ranchi, 1939.

EDUCATION :

- Lutheran Mission School, Amlesa, Tamar, Ranchi, 1946-53
- S.S. High School, Khunti, Ranchi, 1953-57.
- Ranchi University, Ranchi, 1957-63, M.A. (Anthropology).
- University of Chicago, USA, 1963-70, MA, PhD (Linguistics)

REASERCH AND TEACHING :

- Research Assistant, South Asian Languages and Civilizations, University of Chicago, 1963-70
- Assistant Professor-Associate Professor, South Asian Studies, Universtiy of Minnesota, Minneapolis, 1970-81.
- University Professor, Tribal and Regional Languages, Ranchi University, 1981-99
- Visiting Professor, Australian National University Canberra, 1983.
- Visiting Professor, Syracuse University, New York, 1996.
- Visting Professor, Tokyo University, Japan, 2001

FELLOWSHIPS :

- American Institute of Indian Studies, 1977-78.
- United States Educational Foundation in India, 1996.
- Japan Society for the Promotion of Science, Tokyo, 2001

FIELD OF RESEARCH AND TEACHING :

- Indian Languages and Literatures
- Tribal Peoples of India
- World Indigenous Movement m Jharkhand Movement

PUBLICATIONS :

- 13 books (3 edited) and 51 papers.
- Translation (7 books) from Hindi, Sanskrit, Bengali and English

ADMINISTRATIVE SERVICE :

- Vice-Chancellor, Ranchi University, 1985-88.
- Membership in National/International Committees/Organisations
- Committee on Jharkhand Matters. Goverment of India, 1989-95
- Anthropological Survey of India. 1988-91
- National Educational Policy Review Committee, 1990
- Steering Group. Planning Commission, 1996.
- Experts Committee, National Commission on Women, 1997- Present.
- Indian Confederation of Indigenous and Tribal Peoples, 2000-Present

- National Advisory Board, International Labor Organization, 1997-Present.
- Executive Committee, Jawaharlal Nehru University 1990-95.
- Executive Committee, North-Eastern Hill University, 1993-96.
- Jharkhand Peoples Party, 1991-98 (Chief President).
- Adimjati Sewa Mandal, 1990-Present (President).
- Jharkhand Sanskritik Morcha, 1998-Present (President).
- Jharkhand Buddhijiwi Morcha, 1998-Present (President).
- Ranchi University PG Teachers Association, 1998-Present (President).
- Bharitiya Sahitya Vikas Nyas, 1998-Present (Secretary).
- Binrai Institute of Research, Study and Action, 1997-Present (President).
- Standing Committee, Human Rights Education, University Grants Commission, 1998-Present.
- National Committee for Promotion of Social and Economic Welfare, 1998-Present.
- Expert Committee, Sahitya Academy, 1999-Present.
- Working group on Empowerment of Scheduled Tribes Planning Commission, 2001-2005. (Chair Person).
- National Council for Teacher Education, 2001.

PARTICIPANT IN INTERNATIONAL MEETINGS/CONFERENCES :

- Festival of India in the USSR, 1987 (Leader of Delegation).
- International Music Workshop, Bali, Indonesia, 1988.
- International Dance Alliance, Manila, Philippines, 1989.
- International Folk Dance Festival, Taipei, 1990.
- Adivasi Campaign in Europe, 1993.
- Dalit Campaign in Europe, 1994.
- International Conference on Indigenous Economy, Copenhagen, Denmark, 1997
- United Nations Working Group on Indigenus Populations, Geneva 1990-Present (Leader of delegation).
- International Alliance of Indigenous Peoples of the Tropical Forests, Nagpur. 1998.
- Asian Indigenous Peoples' Workshop on Permanent forum. , Indore, 1999
- International Conference on Indigenous Peoples. Upsala, Sweden, 2000
- International Conference on Hunting & Games, Berlin, 2000

TRAVELS : North America, Europe and Asia-Pacific.

CONTACT : Department of Tribal and Regional Languages, Ranchi Unversity.
Ranchi 834008, Jharkhand • Telephone / fax : 009 651 233090

❑❑❑

रतन सिंह मानकी

जन्म :– ग्राम किताहातु, पोस्ट सोयको, मूरहू, राँची, 15.07.1954

शिक्षा :–
- प्रारंभिक : प्राथमिक मध्य विद्यालय, मूरहू, मध्य विद्यालय, कुड़ापूर्ति, अनिगड़ा, हाई स्कूल, खूँटी।
- उच्च शिक्षा लक्ष्मीनारायण उच्च विद्यालय, मूरहू, (1956–1971)

प्रशिक्षण :–
- टर्नर,, आई॰ टी॰ आई॰ हेहल राँची, (1974–1976),
- सी॰ टी॰ आई॰ : एच॰ ई॰ सी॰, (1976–1977)

सदस्य :–
- भू–रक्षा समिति, 1978 में भू–सर्वे के विरूद्ध आन्दोलन में सक्रिय। सम्पूर्ण खूँटी प्रमण्डल का दौरा।
- सरना समाज केन्द्रीय समिति खूँटी का अध्यक्ष, (1978 से अब तक)

सम्प्रति :– एच॰ ई॰ सी॰ में सेवारत (1990 से)

सम्पर्क :– क्वार्टर नं॰ ए/44/सेक्टर – 3, धुर्वा, राँची – 4

❑❑❑

"आदिधर्म" की विशेषताएँ

■ परमेश्वर (सिंगबोंगा, बांदोबोंगा, धर्मेस इत्यादि) का समाजीकृत स्वरूप (पिता, पितामह) अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण है। आदिवासियों के बीच "आजा–नाती" का संबंध सबसे मधुर माना जाता है। परमेश्वर मनुष्य के साथ इसी नातेदारी में बंधा है।

■ प्रकृति के विशिष्ट अवयवों (पहाड़, नदी, जंगल इत्यादि) को ही परमेश्वर के प्रतीकात्मक सर्वश्रेष्ठ "घर" के रूप में स्वीकार करना। कृत्रिम संरचनाएँ–मंदिर, मसजिद, गिरजा इत्यादि आवश्यक नहीं।

■ मनुष्य के अमरत्व में विश्वास करना। यहाँ प्रतीकात्मक अमरत्व प्रतिबिंबित हुआ है मृतक की आत्मा की छायारूप में घर वापसी के अनुष्ठान में, जो कि थोड़े–बहुत अंतर के साथ सभी आदिवासी समुदायों में संपन्न होता है।

■ आदिधर्म व्यवस्था में मनुष्य पाप–पुण्य और स्वर्ग–नरक की अवधारणाओं से अपेक्षाकृत कम ग्रसित है। समाज सम्मत काम ही पुण्य है और समाज विरोधी काम पाप। आदमी स्वर्ग, नरक या अन्यत्र कहीं नहीं जाता। सामाजिकता ही स्वर्ग है, असामाजिकता नरक।

■ बिना किसी मध्यस्थता (पंडित, मौलवी, पादरी इत्यादि) के परमेश्वर से सीधे जुड़ने की अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्रता। आदिवासी के सभी अनुष्ठान न्यूनतम कर्मकांड से संपन्न होते हैं।

■ सृष्टि के अन्य अवदानों (सजीव, निर्जीव) के साथ समानता और पारस्परिक सम्मान बोध के आधार पर सहअस्तित्व। मनुष्य को सारी सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ मानने की धृष्टता नहीं।

■ आदिधर्म सृष्टि के साथ ही स्वतः स्फूर्त है, कालातीत है। किसी अवतार, मसीहा या पैगंबर पर आश्रित नहीं।

मुद्रक : सुकृत प्रेस, कचहरी रोड, राँची • फोन : 2309242